मौर्य प्रशासन एवं उस काल के जन-जीवन की जानकारी अशोक के अभिलेखों, चाणक्य (कौटिल्य) के अर्थशास्त्र, मेगास्थनीज की इंडिका, विशाखदत्त रचित नाटक मुद्राराक्षस तथा श्रीलंका के बौद्ध ग्रंथ दीपवंश और महावंश से प्राप्त होती है।

बौद्ध धर्म को बढ़ावा देने, युद्ध न करने की नीति, शांतिप्रियता के कारण सेना के दुर्बल होने और अयोग्य उत्तराधिकारी के कारण मौर्य वंश का पतन होने लगा। अंतिम दुर्बल मौर्य शासक बृहद्रथ की हत्या उसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने की। पुष्यमित्र शुंग ने मौर्यों की समाप्ति के बाद मगध में शुंग वंश की स्थापना की।

पाठगत प्रश्न 3.2

1. सही मिलान कीजिए :

(क) चाणक्य	(1) हर्यक वंश
(ख) बिम्बिसार	(2) सुवर्ण गिरि
(ग) दक्षिण भारत की राजधानी	(3) नाटक
(घ) मुद्राराक्षस	(4) अर्थशास्त्र

2. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए–

(क) मौर्य वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक .... था। (बिम्बिसार / अशोक)

(ख) 261 ई. पू. में .... पर मौर्य शासक अशोक ने आक्रमण किया। (उज्जैन / कलिंग)

(ग) अशोक के अभिलेख .... और खरोष्ठी लिपि में है। (देवनागरी / ब्राह्मी)

(घ) यूनानी राजदूत मेगास्थनीज ने .... की रचना की थी। (अर्थशास्त्र / इंडिका)

3. मौर्यवंश के किन्हीं तीन शासकों के नाम लिखिए :

....

4. मौर्यकाल में राज्य की आय का मुख्य साधन क्या था?

....

5. मौर्य वंश को किसने समाप्त किया?

....

आपने क्या सीखा

- जनपद किलाबंद शहर था।
- लोहे के उपकरण एवं कृषि के विस्तार से शक्तिशाली आरंभिक राज्य महाजनपद बना। इनके पास राजधानी, सेना, कर व्यवस्था थी। महाजनपदों की संख्या 16 थी।
- मगध सबसे शक्तिशाली महाजनपद था। इसकी राजधानी गिरिव्रज (राजगीर) और पाटलिपुत्र थी। लोहे और हाथियों की अधिकता, उपजाऊ मैदान, सिंचाई के साधनों की उपलब्धता, पहाड़ों से घिरी सुरक्षित राजधानी, नदी मार्ग द्वारा यातायात-व्यवस्था और महत्त्वाकांक्षी राजा के कारण मगध शक्तिशाली हुआ।
- महाजनपद काल खेती के विकास एवं धार्मिक-सामाजिक बदलाव का युग था।
- महापद्मनन्द मगध में नन्द वंश का शक्तिशाली शासक था। अंतिम शासक घनानन्द की हत्या कर चन्द्रगुप्त मौर्य ने मौर्य वंश की स्थापना की।
- भूमि कर के रूप में उपज का 1/6 भाग लिया जाता था।
- सम्राट अशोक ने कलिंग युद्ध के बाद लोगों के कल्याण के लिए युद्ध नीति छोड़ दी। सड़क, सराय, अस्पताल आदि बनवाए। बौद्ध धर्म को बढ़ावा दिया। शांति का संदेश अभिलेखों के माध्यम से फैलाया। अशोक को महान शासक कहा गया है।
- अशोक के अभिलेख पूरे भारत में ब्राह्मी, खरोष्ठी और आरमेइक लिपि में हैं।
- अंतिम मौर्य शासक वृहद्रथ की हत्या उसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने कर दी। पुष्यमित्र शुंग ने मौर्य वंश को समाप्त कर मगध में 'शुंग वंश' की स्थापना की।

पाठांत प्रश्न

1. पाटलिपुत्र का नगर प्रशासन पाँच-पाँच सदस्यों की समितियों द्वारा संचालित होता था।

(क) 5 (ख) 6

(ग) 7 (घ) 8

2. मौर्य प्रशासन की जानकारी इस ग्रंथ से मिलती है :

(क) अर्थशास्त्र (ख) इंडिका

(ग) अशोक के अभिलेख (घ) उपरोक्त सभी

3. सही मिलान कीजिए-

मौर्य प्रान्त	**राजधानी**
(i) उत्तर-पश्चिम भारत	(क) उज्जैन
(ii) दक्षिण भारत	(ख) तोसली
(iii) पूर्वी भारत	(ग) सुवर्णगिरि
(iv) पश्चिमी भारत	(घ) तक्षशिला

4. 'जनपद' शब्द का क्या अर्थ है?

....

5. महाजनपदों की संख्या कितनी थी?

....

6. सर्वाधिक शक्तिशाली महाजनपद कौन से थे?

....

7. मगध की स्थापना किस वंश के शासक ने की थी?

....

8. अशोक के धम्म की तीन विशेषताएँ लिखिए।

....

आइए, करके देखें

1. अशोक के अभिलेख जहाँ पाए गए हैं, उन जगहों को भारतीय उपमहाद्वीप के मानचित्र में चिह्नित कीजिए।
2. सम्राट अशोक द्वारा लागू किए गए धम्म के विचारों की चर्चा कीजिए।
3. भारत के मानचित्र में मगध, कलिंग, उज्जैन और पाटलिपुत्र को दर्शाइए।

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्न

3.1 1. (क) शहर, (ख) 16, (ग) अतरंजीखेड़ा

2. चन्द्रगुप्त मौर्य ने।

3. हर्यक वंश के राजा बिम्बसार ने।

4. घनानन्द।

5. भूमिकर।

3.2 1. (क) 4, (ख) 1, (ग) 2, (घ) 3

2. क) अशोक।

   ख) कलिंग।

   ग) ब्राह्मी।

   घ) इंडिका।

3. चन्द्रगुप्त मौर्य, बिन्दुसार, अशोक, बृहद्रथ (कोई तीन)।

4. कृषि से प्राप्त भूमि कर।

5. मौर्य सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने।

पाठांत प्रश्न

1. 6
2. (घ) उपरोक्त सभी
3. (i) घ, (ii) ग, (iii) ख, (iv) क
4. वह भूमि जहाँ कबीले (जन) के लोगों ने पाँव रखे, यानी बस गए।
5. सोलह।
6. मगध, कोसल और अवंती।
7. हर्यक वंश के शासक बिम्बिसार ने।
8. 1. करुणा (दया), 2. दान, 3. सच्चाई, 4. पवित्रता, 5. अच्छा व्यवहार (कोई तीन)

4

मौर्यों के बाद की सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक व्यवस्था

अंतिम मौर्य शासक वृहद्रथ की हत्या उसके सेनापति पुश्यमित्र शुंग द्वारा कर की गई। इसके कारण 197 ई. पू. में मौर्य वंश का पतन (नाश) हो गया। मौर्यों के बाद मगध पर शुंग वंश एवं कण्व वंश के शासकों ने शासन किया। लेकिन शक्तिशाली केन्द्रीय शक्ति के अभाव में मध्य एशिया और पश्चिमी चीन से आए आक्रमणकारियों ने भारत पर आक्रमण किया। ये आक्रमणकारी भारतीय-यूनानी, शक, पहलव और कुषाण थे। कुषाण वंश के शासक कनिष्क ने सामाजिक-आर्थिक, धार्मिक और राजनैतिक व्यवस्था में बदलाव किया। दूसरी क्षेत्रीय शक्तियाँ – कलिंग, सातवाहन एवं दक्षिण के राज्यों– चोल, चेर और पाण्ड्य ने अपनी शक्ति को बढ़ाया। इसके बाद भारतीय इतिहास में गुप्त वंश के शासकों ने मजबूत राज्य की स्थापना कर साम्राज्य को फैलाया। गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद फिर से क्षेत्रीय शक्तियाँ शक्तिशाली हुईं। बाद में हर्षवर्धन अंतिम प्राचीन महान शक्तिशाली शासक हुआ, जिसने उत्तर भारत को एकता के सूत्र में बाँधा।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- मौर्य शासन के बाद का सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक जीवन का वर्णन कर सकेंगे;
- कनिष्क के शासन की व्याख्या कर सकेंगे;
- गुप्त साम्राज्य की व्यवस्था को स्पष्ट कर सकेंगे;
- अंतिम प्राचीन भारतीय महान शासक हर्षवर्धन के समय राज्य की व्यवस्था का वर्णन कर सकेंगे और
- दक्षिण के आरंभिक राज्यों– चोल, चेर, पाण्ड्य के शासन की तुलना कर सकेंगे।

4.1 मौर्य शासन के बाद का समाज, आर्थिक जीवन, राजनैतिक व्यवस्था और कुषाण शासक कनिष्क

पुष्यमित्र शुंग द्वारा 187 ई.पू. में मौर्य वंश के अंतिम कमजोर शासक वृहद्रथ की हत्या कर दी गई। पुष्यमित्र शुंग ने शुंग वंश की नींव रखी। परन्तु शुंग वंश के अंतिम शासक की हत्या उसके मंत्री वसुदेव कण्व द्वारा कर दी गई। वसुदेव कण्व ने कण्व वंश की स्थापना की। कण्व वंश ने काफी कम समय तक शासन किया।

भारत के उत्तरी-पश्चिमी सीमान्त क्षेत्र बैक्ट्रिया से आए यूनानी लोग बैक्ट्रीयन या भारतीय यूनानी कहलाए। भारतीय यूनानी शासक डेमीट्रियस का पुष्यमित्र शुंग के साथ संघर्ष भी हुआ था। भारतीय यूनानी शासकों में मेनेन्दर सबसे प्रसिद्ध था। मेनेन्दर ने 155 ई.पू. से 130 ई.पू. तक शासन किया। प्रसिद्ध बौद्ध ग्रंथ 'मिलिन्दपन्हों' में मेनेन्दर का वर्णन है।

सीथियन वंश का हिन्दी नाम 'शक' है। 'शक' वंश के लोग मध्य एशिया से ई.पू. प्रथम शताब्दी में भारत आए। शक शासन की सीमाएँ तक्षशिला से लेकर मथुरा और गुजरात तक थीं। शक शासकों में सबसे प्रसिद्ध रुद्रदामन था। रुद्रदामन की जानकारी जूनागढ़ (गिरनार) अभिलेख से मिलती है।

पार्थियन (पहलव) वंश के लोग मूल रूप से ईरान के थे। पार्थियन (पहलव) वंश के शासकों की जानकारी पेशावर के निकट मरदान में 'तख्त-ए-बही' से मिलती है।

गोंडोफर्निस संत थॉमस का समकालीन माना जाता है। संत थॉमस ने गोंडोफर्निस एवं उसके भाई का ईसाई धर्म में धर्मान्तरण करवाया था।

पश्चिमी चीन की जाति यू-ची ने शकों और पहलवों को हराया। ये यू-ची जाति के लोग कुषाण कहलाए। कुषाण वंश का पहला शासक कुजुल कडफीसस था। फिर उसका पुत्र वीम कडफीसस शासक हुआ। परन्तु सर्वाधिक प्रसिद्ध कुषाण शासक कनिष्क हुआ।

ई.पू. प्रथम शताब्दी के मध्य सातवाहन वंश शक्तिशाली होकर उभरा। सातवाहन साम्राज्य दक्षिण में कृष्णा नदी से लेकर उत्तर में गोदावरी नदी तक फैला था। सातवाहन वंश की राजधानी महाराष्ट्र में औरंगाबाद के निकट प्रतिष्ठान (वर्तमान में पैथन) थी। गौतमीपुत्र शतकर्णी ने पश्चिमी शक शासक नहपान को पराजित किया। इस वंश के अन्य शासक थे– यज्ञ श्री शतकर्णी और वाशिष्ठीपुत्र पुलुमावी। तीसरी शताब्दी के चौथे भाग में सातवाहन वंश का पतन हो गया।

300 ई.पू. से 300 ई. तक दक्षिण भारत में तीन वंश थे– चोल, चेर और पाण्ड्य। इनकी जानकारी 'संगम-साहित्य' से होती है। 'संगम-साहित्य' दक्षिण भारत के आरंभिक इतिहास की जानकारी देता है। यह तमिल समाज की अर्थ-व्यवस्था और सभ्यता का चित्रण करता है। मौर्य युग के बाद आर्थिक क्रियाकलाप- कृषि, व्यापार, शिल्प और व्यवसाय थी। मौर्य युग के बाद भी आंतरिक और बाहरी क्षेत्र के व्यापार में प्रगति हुई। दो महत्त्वपूर्ण व्यापार मार्ग थे– (1) उत्तरापथ, जो भारत के उत्तरी-पूर्वी हिस्सों को उत्तरी-पश्चिमी सीमा से जोड़ता था। (2) दक्षिणापथ, जो उत्तर और दक्षिण भारत को जोड़ता था।

रोमन साम्राज्य के साथ व्यापार लाल सागर और फारस की खाड़ी से होने लगा। एक पुराने विवरण में भारत-रोम व्यापार का उल्लेख है। रोमवासी सोने और चाँदी के बदले भारत से काली मिर्च, वस्त्र, इत्र, मसाले, चन्दन की लकड़ी, मलमल, रत्न, हाथी दाँत आदि खरीदते थे।

हस्तशिल्प का भी विकास हुआ। 'मिलिन्दपन्हो' में 750 व्यवसायों का उल्लेख है। इनमें से 60 व्यवसाय हस्तशिल्प पर आधारित हैं। एक ही तरह के व्यापारियों तथा शिल्पियों का संगठन श्रेणी कहलाता था। श्रेणी बैंक की तरह काम करता था। श्रेणी वस्तु का मूल्य और गुणवत्ता तय कर नियम बनाता था। इस काल में गांधार मूर्तिकला-शैली और स्थापत्य-कला का विकास हुआ। मथुरा कला-शैली व अमरावती कला-शैली की बौद्ध मूर्तियाँ, स्तूप, मठ और विहार बनाए गए।

चित्र 4.1 : महात्मा बुद्ध

मौर्य युग के बाद भी समाज में वर्ण-व्यवस्था थी। उस समय जाति-प्रथा का प्रचलन बढ़ा। समाज में महिलाओं को बराबरी का स्थान नहीं था। समाज में ब्राह्मण और क्षत्रियों का प्रभाव था। शूद्रों की स्थिति निम्न थी।

दक्षिण भारत में उत्तर भारत जैसी वर्ण-व्यवस्था समाज में नहीं थी। समाज में ब्राह्मणों का अस्तित्व था। वैदिक कर्मकाण्ड एवं समारोह होता था, पर ब्राह्मणों को समाज में विशेष अधिकार नहीं था। यहाँ व्यवसाय के अनुसार व्यक्ति की पहचान होती थी। योद्धाओं को समाज में उच्च स्थान प्राप्त था।

मौर्य युग के बाद क्षत्रपों के रूप में राजाओं ने शासन किया। प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी। राजा अपने मंत्री की सहायता से शासन करता था। राजा वस्तु एवं नकद दोनों रूप में कर लेते थे। सातवाहन शासकों ने बौद्धों एवं ब्राह्मणों को कर-मुक्त भूमि दान में दी। सातवाहन शासक वर्ण-व्यवस्था को बनाए रखना चाहते थे।

पाठगत प्रश्न 4.1

1. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए-

(क) कण्व वंश की स्थापना .... ने की। (वसुदेव कण्व / पुश्यमित्र शुंग)

(ख) भारतीय-यूनानी शासक में .... सबसे प्रसिद्ध था। (डेमीट्रियस / मेनेन्दर)

(ग) रुद्रदामन की जानकारी .... अभिलेख से मिलती है। (जूनागढ़ / तख्त-ए-बही)

(घ) .... कुषाण वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक था। (कडफीसस / कनिष्क)

2. मौर्य युग के बाद दो महत्त्वपूर्ण व्यापार मार्ग कौन थे?

....

3. नहपान को किस सातवाहन शासक ने हराया था?

....

4. किस वंश के शासकों ने ब्राह्मणों को कर-मुक्त भूमि दान में दी?

....

5. सातवाहन शासक किस सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखना चाहते थे?

....

4.2 कुषाण शासक कनिष्क का जीवन

कुषाण वंश के लोग पश्चिमी चीन के यू-ची जाति के थे जो शकों और पहलव शासकों को हराकर भारत आए। कुषाण वंश के शासक क्रमशः कुजुल कडफीसस, वीम कडफीसस और कनिष्क थे। इनमें कनिष्क सबसे प्रसिद्ध शासक था। कनिष्क का शासन 78 ई. से माना जाता है। उसी समय से उसने शक संवत् शुरू किया। कनिष्क ने मध्य एशिया से लेकर पूरे उत्तर भारत में वाराणसी, कौशाम्बी, श्रावस्ती तक साम्राज्य फैलाया। कुषाण शासकों ने 'देवपुत्र' की उपाधि धारण की। कनिष्क ने बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार करवाया। उसने

बौद्ध धर्म को संरक्षण दिया। कनिष्क ने श्रीनगर (जम्मू-कश्मीर) के निकट कुंडलवन में चतुर्थ बौद्ध संगीति (सभा) बुलाई। इसमें बड़ी संख्या में बौद्ध भिक्षुओं ने भाग लिया था। बौद्ध धर्म हीनयान और महायान दो भाग में बँट गया। कनिष्क ने महायान को संरक्षण दिया।

कनिष्क ने पुरुषपुर (पेशावर) में बौद्ध स्तूप का निर्माण करवाया। कनिष्क को बौद्ध धर्म के प्रसार एवं संरक्षण देने के कारण दूसरा अशोक भी कहते हैं। कनिष्क के शासन काल में साहित्य और चिकित्सा के क्षेत्र में प्रगति हुई। 'चरक संहिता' के लेखक चरक एवं 'बुद्धचरित' के लेखक अश्वघोष कनिष्क के समय में ही हुए।

चित्र 4.2 : कुषाण शासक की मूर्ति

कनिष्क ने मूर्तिकला को संरक्षण दिया। मूर्तिकला की गांधार और मथुरा कला शैली का विकास हुआ। बुद्ध और बोधिसत्व की मूर्तियाँ बनाई गईं। कुषाणों का प्रशासन छोटे-छोटे क्षेत्रों में बँटा था। महाक्षत्रप के द्वारा हर क्षेत्र संचालित होता था। घुड़सवारी करते समय कुषाण शासक पतलून पहनते थे। कुषाण वंश का तीसरी शताब्दी में पतन प्रारंभ हो गया।

चित्र 4.3 : कुषाण कालीन सिक्के

पाठगत प्रश्न 4.2

1. **सही वाक्य पर ✓ तथा गलत पर × का निशान लगाइए–**

   (क) कुषाण वंश के लोग पश्चिमी चीन की यू-ची जाति के थे। ( )

   (ख) कनिष्क कुषाण वंश का प्रसिद्ध शासक नहीं था। ( )

   (ग) कनिष्क के समय बौद्ध धर्म दो भागों में बँट गया था। ( )

   (घ) चरक और अश्वघोष कनिष्क के समय में ही हुए थे। ( )

2. कनिष्क ने शक संवत् कब चलाया?

   ....

3. चतुर्थ बौद्ध संगीति (सभा) कहाँ बुलाई गई थी?

   ....

4. कुषाण वंश का पतन किस शताब्दी में प्रारंभ हो गया?

   ....

5. कुषाण शासक किस उपाधि को धारण करते थे?

   ....

4.3 गुप्त साम्राज्य की व्यवस्था

कुषाण वंश के पतन के बाद उत्तर भारत में गुप्त वंश का उदय हुआ। गुप्त वंश की स्थापना श्रीगुप्त ने की थी। इसके पुत्र घटोत्कच ने महाराज की उपाधि धारण की। चन्द्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय, कुमारगुप्त और स्कन्दगुप्त महान शासक हुए। गुप्तवंश के शासकों ने पूर्वी उत्तर प्रदेश और मगध (बिहार) से प्रशासन का संचालन किया। गुप्तों ने 315 ई. से 550 ई. तक शासन किया।

चन्द्रगुप्त प्रथम (319-334 ई.) गुप्तवंश का पहला प्रभावी शासक था। उसने लिच्छवी वंश की राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया। चन्द्रगुप्त प्रथम का साम्राज्य मगध, साकेत (अयोध्या), प्रयाग (इलाहाबाद) तक था। इसकी राजधानी पाटलिपुत्र (पटना) थी।

समुद्रगुप्त (335-375 ई.) चन्द्रगुप्त प्रथम का उत्तराधिकारी बना था। समुद्रगुप्त ने युद्ध और विजय नीति को अपनाया। समुद्रगुप्त ने उत्तर भारत के नौ राजाओं और दक्षिण भारत के 12 राजाओं को हराया। अठारह जंगली जातियों को भी हराया था। दक्षिण-पूर्वी एशिया के शासकों से भेंट लेना स्वीकार किया। समुद्रगुप्त ने अश्वमेध यज्ञ किया था। महान विजय के कारण समुद्रगुप्त को 'भारत का नेपोलियन' कहते हैं। समुद्रगुप्त एक कवि, संगीतकार और शिक्षा का महान संरक्षक था। सोने के सिक्के पर वीणा बजाते हुए समुद्रगुप्त को दिखाया गया है। हरिषेण द्वारा लिखी गई 'प्रयाग प्रशस्ति' में समुद्रगुप्त की उपलब्धियाँ लिखी गई हैं।

चित्र 4.4 : समुद्रगुप्त कालीन सिक्के

चन्द्रगुप्त द्वितीय समुद्रगुप्त का उत्तराधिकारी बना। चन्द्रगुप्त द्वितीय को विक्रमादित्य भी कहा गया है। इसने वैवाहिक संबंधों द्वारा अपनी स्थिति मजबूत की। कुबेरनाग से विवाह कर नागा राजा से मैत्री संबंध बनाए।

वाकाटक शासक रुद्रसेन द्वितीय से अपनी पुत्री प्रभावती गुप्त का विवाह किया। चन्द्रगुप्त कला और साहित्य का संरक्षक था। संस्कृत के महान कवि कालिदास इसी के काल में हुए थे।

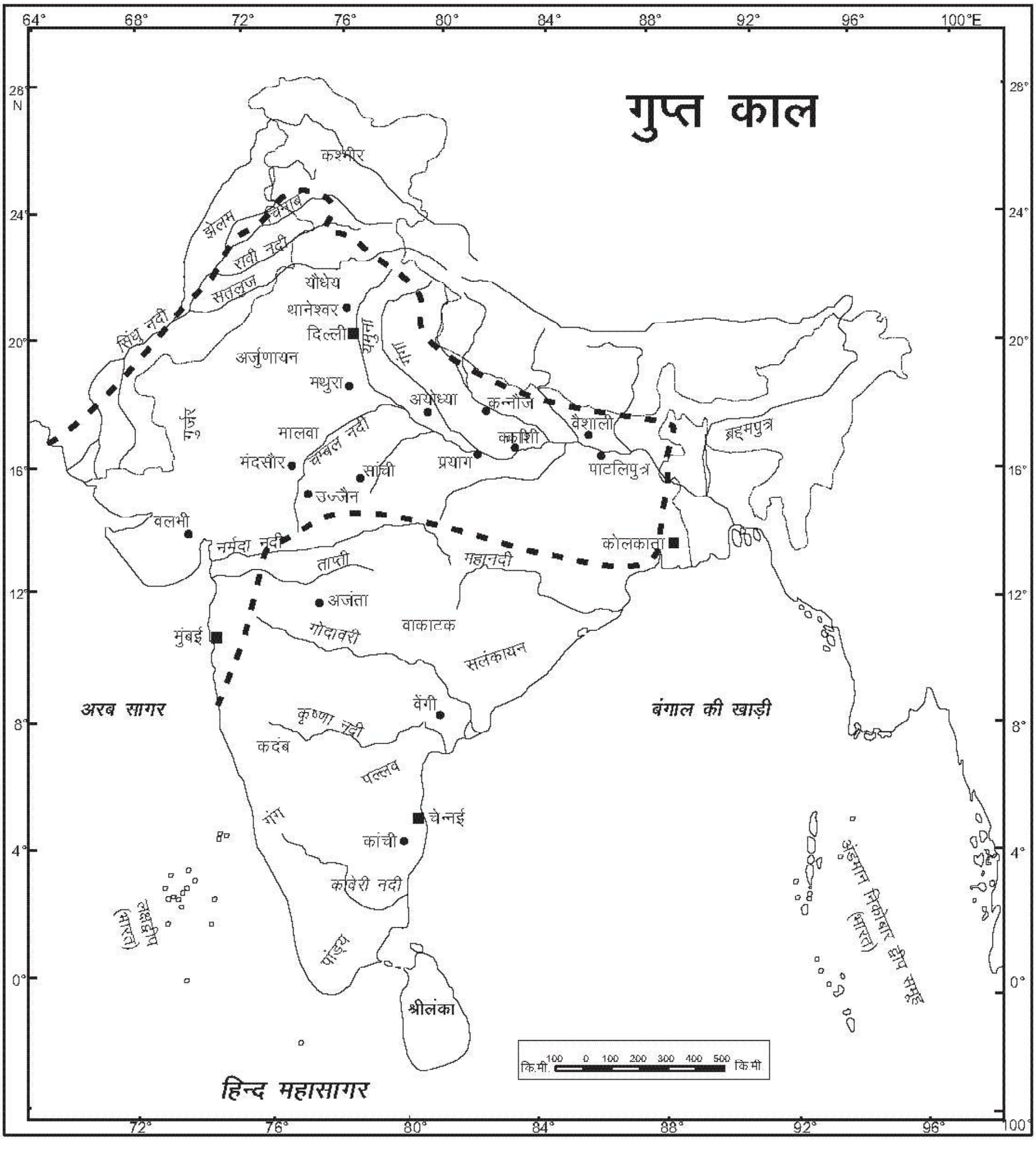

चित्र 4.5 : गुप्त साम्राज्य

चीनी बौद्ध यात्री फाह्यान ने चन्द्रगुप्त द्वितीय (404-411 ई.) के काल में भारत की यात्रा की। फाह्यान ने गुप्तकालीन जीवन का वर्णन किया है। चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय राज्य में शांति-व्यवस्था बनी रही, जिससे

कृषि, उद्योग, व्यापार, साहित्य, विज्ञान और कला की काफी प्रगति हुई। लोगों का जीवन सुखमय और समृद्ध हुआ। इसके कारण चन्द्रगुप्त द्वितीय के काल को प्राचीन भारत का **'स्वर्ण काल'** कहते हैं।

कुमारगुप्त (415-455 ई.) ने अपने पिता चन्द्रगुप्त द्वितीय के समान साम्राज्य की रक्षा की। लेकिन उसे हूणों के द्वारा चुनौती मिलने लगी। कुमारगुप्त के उत्तराधिकारी स्कन्दगुप्त ने हूणों के आक्रमण को विफल कर दिया। लेकिन स्कन्दगुप्त के बाद के शासकों ने गुप्त साम्राज्य को दुर्बल बना दिया। हूणों के आक्रमण से गुप्त वंश का पतन हो गया।

चित्र 4.6 : फाह्यान

पाठगत प्रश्न 4.3

1. **सही वाक्य पर ✓ तथा गलत पर × का निशान लगाइए–**

   (क) कुषाण वंश के बाद उत्तर भारत में गुप्त वंश का उदय हुआ। ( )

   (ख) गुप्त वंश की स्थापना चन्द्रगुप्त प्रथम ने की थी। ( )

   (ग) चन्द्रगुप्त प्रथम ने लिच्छवी राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया। ( )

   (घ) फाह्यान एक चीनी बौद्ध यात्री था। ( )

2. 'प्रयाग प्रशस्ति' में किस गुप्त शासक की उपलब्धियाँ हैं?

   ....

3. गुप्तों के पतन का मुख्य कारण क्या था?

   ....

4. किस गुप्त शासक के काल को प्राचीन भारत का स्वर्णकाल कहा जाता है?

   ....

5. चन्द्रगुप्त की राजधानी कहाँ थी?

   ....

4.4 हर्षवर्धन

गुप्त साम्राज्य का पतन हूणों के आक्रमण से होने लगा। गुप्त शासकों की शक्ति कमजोर होने लगी। इसके कारण उत्तर भारत में विभिन्न क्षेत्रों में बड़ी संख्या में क्षेत्रीय शासकों का उदय हुआ। इनमें प्रमुख थे– थानेसर

का पुष्यभूति वंश, कन्नौज का मौखरि वंश और वल्लभी का मैत्रक वंश। साथ ही, दक्षिण भारत में चालुक्य वंश और पल्लव वंश मजबूत शासक के रूप में उभरे।

गुप्त वंश के पतन के बाद पुष्यभूति वंश प्रमुख शासक था। उसकी राजधानी थानेसर (कुरुक्षेत्र में) थी। प्रभाकरवर्धन ने हूणों को पराजित कर पंजाब और हरियाणा में अपनी स्थिति मजबूत की। प्रभाकरवर्धन की मृत्यु के बाद उसका बड़ा पुत्र सिंहासन पर बैठा, जिसकी बंगाल और बिहार के शशांक शासकों द्वारा हत्या कर दी गई।

606 ई. में हर्षवर्धन का राज्याभिषेक हुआ। उस समय हर्षवर्धन मात्र 16 वर्ष की उम्र का था। गद्दी सँभालने के बाद उसने अपनी बहन राजश्री के साम्राज्य को अपने राज्य से जोड़ा और कन्नौज को राजधानी बनाया। हर्षवर्धन ने अपनी पुत्री का विवाह मैत्रक वंश के शासक ध्रुवसेन द्वितीय से किया। दोनों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित हुए।

हर्षवर्धन ने पंजाब, उत्तर प्रदेश, बंगाल, बिहार और उड़ीसा को संगठित किया। उसने नर्मदा नदी तक अपनी दक्षिणी सीमा का विस्तार किया। हर्षवर्धन ने उत्तर भारत के देव की उपाधि धारण की थी। उसने कृषि, व्यापार, उद्योगों और शिल्प को बढ़ावा दिया। वह विद्वानों का संरक्षक था। उसके दरबारी कवि बाणभट्ट थे, जिन्होंने 'हर्षचरित' लिखा।

प्रसिद्ध चीनी बौद्धयात्री ह्वेनसांग (629-644 ई.) ने भारत की यात्रा की। उसने अपने यात्रा वृत्तांत 'सी-यू-की' में हर्षवर्धन को महान शासक बताया है। ह्वेनसांग ने हर्षवर्धन के समय के समाज की व्यवस्था का वर्णन किया है।

चित्र 4.7 : ह्वेनसांग

हर्षवर्धन को चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय ने 646 ई. में नर्मदा नदी के तट पर हराया। बाद में 647 ई. में हर्षवर्धन की मृत्यु हो गई।

पुष्यभूति वंश का शासक हर्षवर्धन प्राचीन भारत का अंतिम महान शासक था। उसने उत्तरी भारत को एक सूत्र में बाँधा और दक्षिण में नर्मदा तक राज्य का विस्तार किया। हर्षवर्धन स्वयं विद्वान था और विद्वानों का संरक्षक था। उसने साहित्य, कला, धर्म को संरक्षण प्रदान किया। हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद एक बार फिर भारत में राजनीतिक अस्थिरता का दौर शुरू हुआ जो आठवीं शताब्दी तक चला। तब गुर्जर-प्रतिहार उत्तर भारत में शक्तिशाली होकर उभरे। इस समय नालंदा बौद्ध शिक्षा का महत्त्वपूर्ण केन्द्र था।

पाठगत प्रश्न 4.4

1. **सही मिलान कीजिए–**

(क) थानेसर	(i) मौखरि
(ख) कन्नौज	(ii) मैत्रक
(ग) वल्लभी	(iii) पुष्यभूति

2. **सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए–**

   क) .... में हर्षवर्धन का राज्याभिषेक हुआ। (606 ई. / 607 ई.)

   ख) हर्षवर्धन ने .... को अपनी राजधानी बनाया। (कन्नौज / पटना)

   ग) हर्षवर्धन को पुलकेशिन द्वितीय ने .... नदी के तट पर हराया। (नर्मदा / गंगा)

3. हर्षवर्धन का दरबारी कवि कौन था?

   ....

4. हर्षवर्धन के काल में कौन सा चीनी बौद्ध यात्री भारत आया था?

   ....

5. हर्षवर्धन की बहन का क्या नाम था?

   ....

4.5 दक्षिण के राज्य – चोल, चेर और पाण्ड्य

दक्षिण भारत में 1200 ई.पू. से 300 ई.पू. तक महापाषाणिक संस्कृति मिलती है। वह संस्कृति, जिसमें कब्रों के ऊपर बड़े-बड़े पत्थर लगाकर दफनाते थे, महापाषाणिक संस्कृति कहलाती थी। उस समय के काले-लाल मिट्टी के बर्तन मिले हैं। प्रत्येक कब्र में लोहे के औजार मिले हैं। तीर, कटार, तलवार, त्रिशूल, कुल्हाड़ी, हल, कुदाल, हँसिया आदि मिले हैं।

दक्षिण भारत में महापाषाणिक संस्कृति के बाद संगम काल की शुरुआत होती है। 300 ई.पू. से 300 ई. तक का काल संगम काल माना जाता है। संगम का अर्थ है– कवियों का सम्मेलन, जिसमें तमिल कवियों द्वारा तमिल कविताओं को लिखा गया। संगम साहित्य द्वारा दक्षिण भारत के आरंभिक युग के तीन राजवंशों– चोल, चेर और पाण्ड्य शासकों – की जानकारी मिलती है।

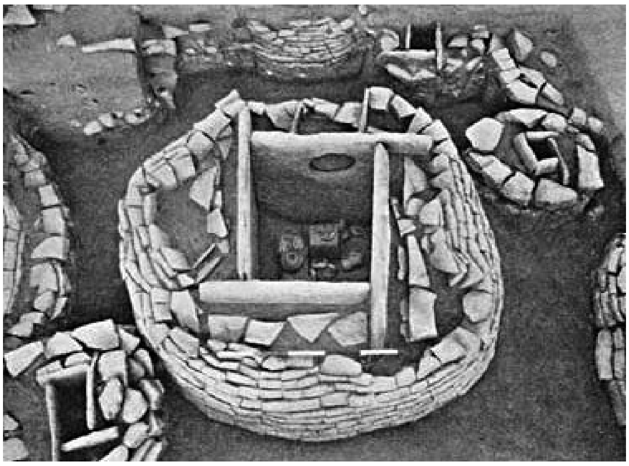

चित्र 4.8 (क), (ख) : महापाषाणिक कब्रें

पाण्ड्य शासकों की राजधानी मदुरै थी। मदुरै में पाण्ड्य शासकों ने तीन संगम आयोजित किए। संगम साहित्य में लिखी गई कविता की विषय-वस्तु प्रेम या युद्ध था। ये कबीले के रूप में शासन करते थे। तमिलनाडु के तिरुनलवेली में कोरकई पाण्ड्यों का महत्त्वपूर्ण बन्दरगाह था। यह मोतियों के लिए प्रसिद्ध था।

चेर (केरल) राज्य की राजधानी वनजी (करूर – तमिलनाडु के निकट) थी। वनजी राजधानी के साथ व्यापार एवं शिल्प का केन्द्र भी था। 'मुजिरिस' दक्षिण-पश्चिम तट पर चेर साम्राज्य का सर्वोत्तम बन्दरगाह था। मुजिरिस में रोम से जहाज में भरकर सोना-चाँदी आता था और बदले में ये जहाज काली मिर्च, मसाले, वस्त्र आदि ले जाते थे। यह गुणवत्तापूर्ण वस्तुओं और हाथी दाँत का प्रमुख केन्द्र था।

चित्र 4.9 : रथ मंदिर, महाबलिपुरम

चोल राज्य की राजधानी उरैयूर (तमिलनाडु में त्रिचनापल्ली) थी। यह भवनों वाला सुन्दर नगर था। चोलों का प्रमुख बन्दरगाह कावेरीपत्तनम या पुहार था। इनकी राजधानी बदलती रही। कभी तंजौर हुई और कभी गंगेकोण्डचोलपुरम। चोल, चेर और पाण्ड्यों में बार-बार संघर्ष होता था।

इन प्राचीन आरंभिक दक्षिण भारत के राज्यों में चोल शासक सर्वाधिक शक्तिशाली थे। इनका आरंभिक प्रसिद्ध राजा 109 ई. में करिकाल था। करिकाल ने लंका के राजा को हराया और वहाँ के युद्धबंदियों को अपने राज्य में ले आया। युद्धबंदियों से करिकाल ने कावेरी नदी पर 160 मीटर लम्बा बाँध बनवाया। कृषि के विकास के लिए सिंचाई की व्यवस्था की और नहरें खुदवाई। करिकाल वैदिक धर्म का समर्थक था। उसने अनेक यज्ञ भी किए। करिकाल ने शक्तिशाली जल सेना (नौ-सेना) भी बनाई। चोल साम्राज्य पाण्ड्य राज्य के पूरब-उत्तर में पेन्नार और बैल्लूर नदियों के बीच था। वर्तमान के तंजौर और त्रिचनापल्ली ज़िले इसमें शामिल थे। चोल शासकों की स्थानीय स्वशासन प्रणाली महत्त्वपूर्ण थी।

दूसरी शताब्दी में नेडुजेलियन नामक प्रसिद्ध पाण्ड्य राजा था। नेडुजेलियन स्वयं उच्च कोटि का कवि था और महान् कवियों का संरक्षक था। उसने अनेक वैदिक यज्ञ किए। पाण्ड्य शासकों ने अपने-आपको महाभारतकालीन पाण्डवों के साथ संबंधित किया। पाण्ड्य शासकों के रोमन साम्राज्य से व्यापारिक संबंध थे। पाण्ड्य शासकों ने यूनानी शासक आगस्टस सीजर के दरबार में दूत भेजे थे।

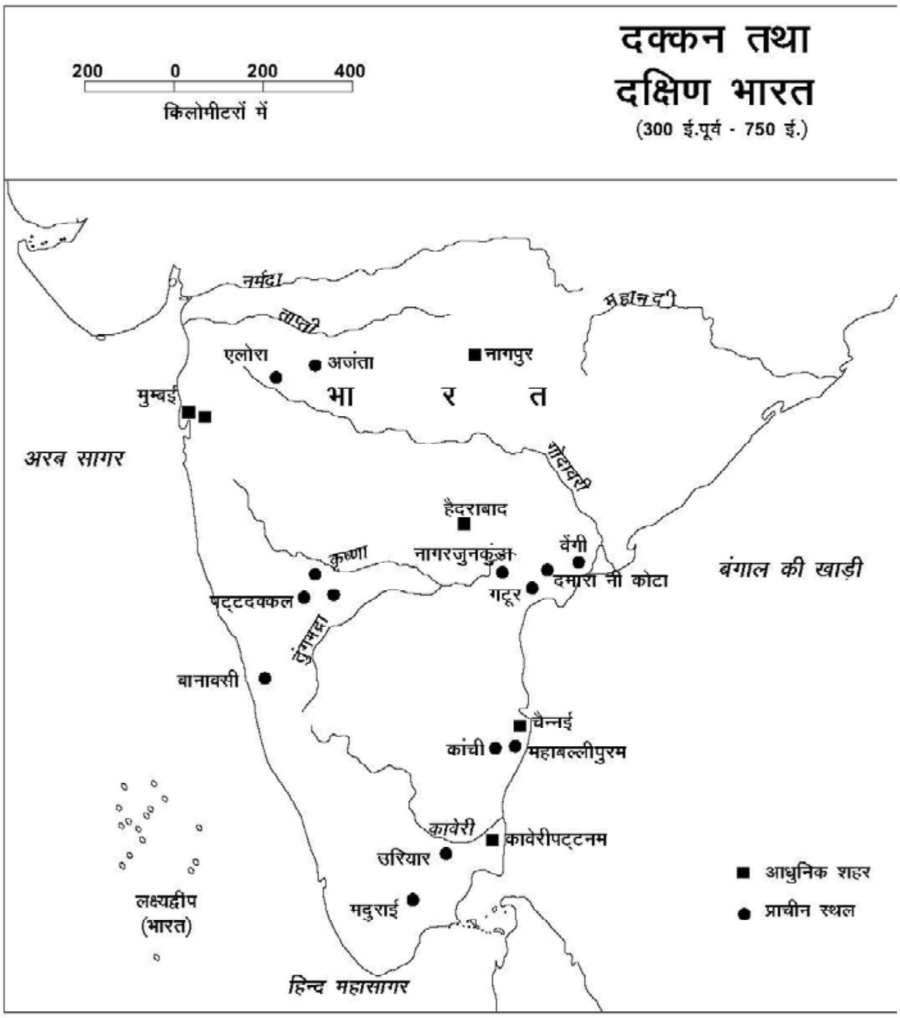

चित्र 4.10 : दक्षिण के राज्य

पाण्ड्य शासकों के राज्य में मदुरै, तिरुनलवेली और ट्रावनकोर प्रदेश शामिल थे। पाण्ड्यों ने तमिलनाडु के दक्षिण इलाके में शासन किया। 'संगम साहित्य' तमिल भाषा में हैं। तोलकाप्पियम, एत्तूतोगोई, पट्टूपात्तू, सिल्पादिकारम्, मणिमेखलाई और जीवक चिन्तामणि इसके प्रमुख ग्रंथ हैं। संगम साहित्य में पाण्ड्य शासकों और तमिल समाज की महत्त्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध है।

ईसा की पहली शताब्दी में पेरुनार नामक प्रसिद्ध चेर राजा था। उसका राज्य पाण्ड्य राज्य के उत्तर-पश्चिम में स्थित था। चेर राज्य उत्तर में कोंकण तट तक फैला हुआ था। चेर राज्य में मालाबार, कोचीन, ट्रावनकोर के हिस्से शामिल थे।

चित्र 4.11 : नटराज

आरंभिक दक्षिण भारत के राज्यों– चोल, चेर तथा पाण्ड्य– के शासन में समाज में उत्तर भारत की तरह वर्ण-व्यवस्था नहीं थी। ब्राह्मण, अधिकारी, व्यापारी और किसानों की अलग-अलग सामाजिक श्रेणियाँ थीं। धनी लोगों का जीवन अच्छा था। वे पक्के मकानों में रहते थे। समाज में उन्हें सम्मान प्राप्त था। परन्तु गरीब लोग झोपड़ी में रहते थे और उन्हें समाज में कम सम्मान मिलता था।

चोल, चेर और पाण्ड्य राज्यों में ब्राह्मण-धर्म का प्रभाव था। राजा वैदिक यज्ञ और धार्मिक कर्मकांड करते थे। वे जैन- धर्म और बौद्ध-धर्म के लोगों से ब्राह्मण-धर्म पर भी चर्चा करते थे। चोल, चेर और पाण्ड्य राज्यों की मुख्य आर्थिक क्रिया कृषि थी। दक्षिण भारत की भूमि काफी उपजाऊ थी। कपास की मुख्य रूप से

खेती की जाती थी। धान, गन्ना, हल्दी, फल एवं मसाले की खेती की जाती थी। इन राज्यों का विदेशी व्यापार रोम, मिस्र, अरब, चीन, मलाया आदि देशों से होता था। हाथी दाँत, गर्म मसाले, वस्त्र आदि विदेश भेजे जाते थे। पेरियार लोग चमड़े का काम करते थे।

पाठगत प्रश्न 4.5

1. सही वाक्य पर ✓ तथा गलत पर ✗ का निशान लगाइए-

(क) महापाषाणिक संस्कृति की कब्र में लोहे के औजार मिले हैं। (   )

(ख) 'संगम' का अर्थ है– कवियों का सम्मेलन। (   )

(ग) प्रसिद्ध आरम्भिक चोल शासक करिकाल के पास हवाई सेना थी। (   )

(घ) नेडुजेलियन चेर राजा था। (   )

2. सही मिलान कीजिए-

(क) चेर शासक	(i) करिकाल
(ख) चोल शासक	(ii) नेडुजेलियन
(ग) पाण्ड्य शासक	(iii) पेरुन्नर

3. दक्षिण-पश्चिम तट पर चेर राज्य का सर्वोत्तम बन्दरगाह कौन सा था?

....

4. पाण्ड्य शासकों की राजधानी कहाँ थी?

....

5. 'संगम-साहित्य' किस भाषा में लिखा गया था?

....

आपने क्या सीखा

- मौर्य शासन के बाद शुंग, कण्व, भारतीय-यूनानी, शक, पहलव, कुषाण और सात वाहन शासकों ने शासन किया।

- रुद्रदामन प्रसिद्ध शक शासक था, जिसकी जानकारी जूनागढ़ अभिलेख से मिलती है।
- कुषाण शासकों– कुजुल कडफीसस, वीम कडफीसस और कनिष्क में कनिष्क सबसे प्रसिद्ध था। बौद्ध धर्म का प्रसार एवं चतुर्थ बौद्ध संगीति (सभा) बुलाने के कारण उसे द्वितीय अशोक कहा जाता है।
- सातवाहनों की राजधानी प्रतिष्ठान थी। इनके प्रसिद्ध शासक गौतमीपुत्र शतकर्णी था, जिसने नहपान (शक राजा) को हराया।
- मौर्य युग के बाद मुख्य व्यापारिक मार्ग उत्तरापथ और दक्षिणापथ था।
- गांधार- कला और मथुरा-कला शैली का विकास हुआ।
- कुषाणों के पतन के बाद गुप्तों का उदय हुआ, जिसके संस्थापक श्रीगुप्त थे। चन्द्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय, कुमारगुप्त, स्कन्दगुप्त महत्त्वपूर्ण शासक हुए। हूणों के आक्रमण के कारण गुप्त शासन का पतन होने लगा।
- पुष्यभूति वंश का शासक हर्षवर्धन प्राचीन भारत का महान राजा था, जिसने उत्तर भारत को सूत्रबद्ध किया। उसने 606 ई.-647 ई. तक शासन किया। इसे पुलकेशिन द्वितीय ने नर्मदा के तट पर 646 ई. में हराया।
- दक्षिण भारत में 1200 ई.पू. से 300 ई.पू. तक महापाषाणिक संस्कृति थी। इसमें कब्रों पर बड़े-बड़े पत्थर लगाए जाते थे। कब्रों में लोहे के औजार मिले हैं।
- प्राचीन दक्षिण भारत में तीन आरंभिक राज्य चोल, चेर और पाण्ड्य थे। पाण्ड्य शासकों ने संगम यानी कवियों का सम्मेलन तीन बार बुलाया। इसमें 'संगम-साहित्य' की रचना हुई। 'संगम-साहित्य' तमिल भाषा में है। इस साहित्य से प्राचीन दक्षिण भारतीय राज्यों के समाज, अर्थ-व्यवस्था और धर्म की जानकारी मिलती है।
- करिकाल आरंभिक शक्तिशाली चोल शासक था।

पाठांत प्रश्न

1. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए-

क) हर्षवर्धन विद्वानों का .... था। (संरक्षक / विरोधी)

ख) बाणभट्ट ने .... लिखा। (हर्षचरित / राम चरित)

ग) .... ने 'सी-यू-की' में हर्षवर्धन को महान शासक बताया। (फाह्यान / ह्वेनसांग)

घ) आरंभिक चोल शासक करिकाल ने .... नदी पर बाँध बनवाया। (गंगा / कावेरी)

2. मेनेन्दर कौन था?

....

3. दक्षिण भारत की जानकारी किस साहित्य से होती है?

....

4. कनिष्क के समय बौद्ध-धर्म का विभाजन किस रूप में हुआ?

....

5. चरक-संहिता किसने लिखी?

....

6. किस गुप्त शासक को भारत का नेपोलियन कहा जाता है?

....

7. दक्षिण भारत के राज्यों का व्यापार किन देशों से होता था?

....

8. कनिष्क को दूसरा अशोक क्यों कहा जाता है?

....

आइए, करके देखें

1. दक्षिण भारत के आरंभिक राज्य चोल, चेर और पाण्ड्य को मानचित्र में अंकित करें।
2. नजदीक के संग्रहालय जाकर गुप्तकालीन वस्तुओं की जानकारी इकट्ठी कर एक रिपोर्ट तैयार करें।
3. सूचना के विभिन्न स्रोतों से जानकारी इकट्ठी कर हर्षवर्धन के बारे में लिखें।

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्न

4.1 1. (क) वसुदेव कण्व

(ख) मेनेन्दर

(ग) जूनागढ़

(घ) कनिष्क

2. उत्तरापथ और दक्षिणापथ।

3. गौतमीपुत्र शतकर्णी।

4. सातवाहन शासकों ने।

5. वर्ण–व्यवस्था को।

4.2 1. (क) ✓

(ख) ✗

(ग) ✓

(घ) ✓

2. 78 ई. में।

3. कुंडलवन (जम्मू कश्मीर) में।

4. तीसरी शताब्दी में।

5. देवपुत्र।

4.3 1. (क) ✓

(ख) ✗

(ग) ✓

(घ) ✓

2. समुद्रगुप्त।

3. हूणों का आक्रमण।

4. चन्द्रगुप्त द्वितीय।

5. पाटलिपुत्र।

4.4 1. (क) (iii)

(ख) (i)

(ग) (ii)

2. (क) 606 ई.

(ख) कन्नौज।

(ग) नर्मदा।

3. बाणभट्ट।

4. ह्वेनसांग।

5. राजश्री।

4.5 1. (क) ✓

(ख) ✓

(ग) ✗

(घ) ✗

2. (क) (iii)

(ख) (i)

(ग) (ii)

3. मुजिरिस।

4. मदुरै।

5. तमिल भाषा।

पाठांत प्रश्न (उत्तर)

1. क) संरक्षक

ख) हर्षचरित

ग) ह्वेनसांग

घ) कावेरी

2. भारतीय-यूनानी शासक।
3. संगम साहित्य।
4. दो भाग-महायान और हीनयान।
5. चरक।
6. समुद्रगुप्त।
7. रोम, मिस्र, अरब, चीन और मलाया से।
8. बौद्ध धर्म का प्रसार करने, चतुर्थ बौद्ध संगीति (सभा) बुलाने, गांधार और मथुरा कला शैली में बुद्ध की मूर्ति बनवाने, मठ व विहार बनवाने, महायान को संरक्षण देने के कारण।

5

दिल्ली सल्तनत

भारत में अरबों के आगमन और इस्लाम के प्रवेश ने नई राजनैतिक व्यवस्था की शुरुआत की। इससे आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण बदलाव आए।

अरब के लोगों ने भारत में इस्लाम धर्म को फैलाया। भारत में कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा दिल्ली सल्तनत की शुरुआत की गई। दिल्ली सल्तनत भारत में 1206 ई. से 1526 ई. तक रही। दिल्ली सल्तनत पर सबसे पहले गुलाम वंश ने 1206 ई. से 1290 ई. तक शासन किया। दिल्ली सल्तनत काल के शासकों ने भवन निर्माण कला, चित्रकला, संगीतकला, भाषा और वाद्ययंत्रों के विकास का काम किया। इस पाठ में हम दिल्ली सल्तनत के बारे में विस्तार से जानेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- भारत में अरबों का आगमन तथा इस्लाम धर्म की शुरुआत का वर्णन कर सकेंगे;
- भारत में दिल्ली सल्तनत एवं गुलाम वंश की स्थापना की व्याख्या कर सकेंगे;
- दिल्ली सल्तनत में आर्थिक सुधार एवं विकास की व्याख्या कर सकेंगे और
- सल्तनत काल में कला व संस्कृति के विकास को स्पष्ट कर सकेंगे।

5.1 अरबों का भारत आगमन तथा इस्लाम का भारत में प्रवेश

7वीं शताब्दी के प्रारंभ में विश्व में एक नई सभ्यता का उदय अरब प्रदेश से हुआ। अरब सभ्यता के उदय का कारण इस्लाम का जन्म था। अरब सभ्यता का प्रभाव पश्चिम एशिया, यूरोप, अफ्रीका एवं भारत सहित विश्व के अन्य देशों पर भी पड़ा।

इस्लाम धर्म के संस्थापक पैगम्बर मोहम्मद थे। इनका जन्म कुरैश कबीले में 570 ई. में अरब प्रदेश में हुआ था। 610 ई. में हजरत मोहम्मद ने धार्मिक अनुभूति के बाद नए धर्म के रूप में इस्लाम की शुरुआत की। इन्होंने मूर्ति-पूजा एवं बहुदेववाद का विरोध किया। 'अल्लाह एक है'- के द्वारा एकेश्वरवाद को बढ़ावा दिया।

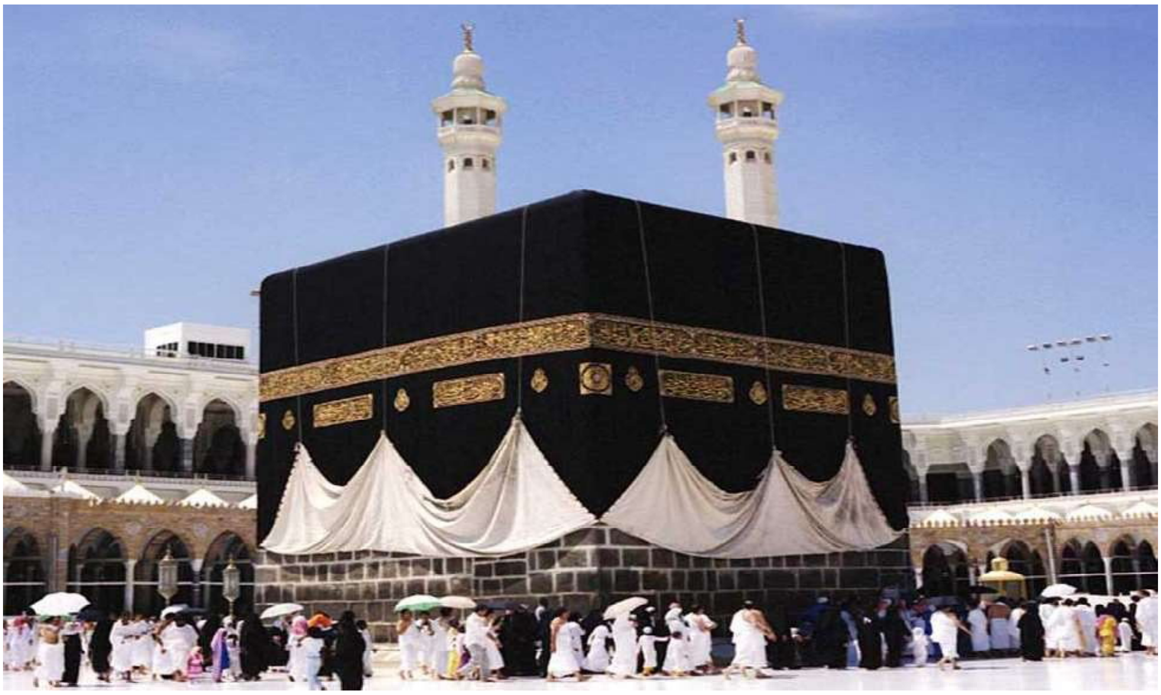

चित्र 5.1 : मक्का की पवित्र मस्जिद

मोहम्मद साहब का लोगों ने विरोध किया। तब वे अपने समर्थकों के साथ मक्का छोड़कर 622 ई. में यसरिब शहर चले गए। मोहम्मद साहब के मक्का से मदीना जाने को हिजरत कहा जाता है। 622 ई. में इस्लामी कैलेण्डर (हिजरी संवत्) जारी किया गया। हजरत मोहम्मद ने यसरिब शहर का नाम बदलकर मदीना रखा। यहाँ मोहम्मद साहब ने इस्लाम के समर्थकों को राजनैतिक एवं धार्मिक रूप से संगठित किया।

इस्लाम धर्म को फैलाने के लिए मोहम्मद साहब के समर्थकों ने 630 ई. में मक्का पर हमला कर शहर में प्रवेश किया। मक्का विजय के बाद 'काबा' इस्लाम का प्रमुख धार्मिक स्थल बन गया। समूचे अरब प्रदेश के विभिन्न कबीलों ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया।

'इस्लाम' शब्द का अर्थ है, अल्लाह के हुक्म के प्रति समर्पण। पैगम्बर मुहम्मद के द्वारा स्थापित इस्लाम के समर्थक मुस्लिम या मुसलमान कहलाए।

पैगम्बर मोहम्मद की मृत्यु के बाद 'खलीफा' को उत्तराधिकारी के रूप में स्वीकारा गया। खलीफाओं को मुसलमानों का सर्वोच्च धार्मिक एवं राजनैतिक नेता माना गया।

अबुबक्र, उमर तथा उस्मान खलीफाओं ने इस्लाम का विस्तार यूरोप, एशिया और अफ्रीका में किया। परन्तु उस्मान की हत्या उनके विरोधी ने कर दी। इसके बाद अली को खलीफा बनाया गया। अली की हत्या के बाद मुसलमान दो भागों में बँट गए। अली के समर्थक 'शिया' कहलाए और शेष मुसलमान सुन्नी कहलाए।

अरब लोगों ने 637 ई. से 639 ई. तक पश्चिमी एशिया, सीरिया, इराक, तुर्की, पर्शिया, उत्तरी अफ्रीका एवं दक्षिण यूरोप पर अधिकार कर लिया था।

712 ई. में उम्मैयद खलीफा ने सेनापति मुहम्मद–बिन–कासिम को भारत पर आक्रमण करने भेजा। अरबों का यह प्रथम आक्रमण था, जिसका उद्देश्य देबोल के लुटेरों द्वारा अरब मालवाहक पोतों की लूट का बदला लेना था। साथ ही, आक्रमण के अन्य उद्देश्य थे – साम्राज्य एवं इस्लाम का विस्तार करना तथा भारतीय धन–सम्पदा को लूटना।

मुहम्मद–बिन–कासिम ने देबोल के राजा को 712 ई. में सिंध पहुँच कर पराजित किया। इसी वर्ष रावार के युद्ध में सिंधु नदी पार कर राजा दाहिर को पराजित किया। इसमें भयंकर कत्ले–आम मचा। सिंध–विजय ने भारत में अरबों और इस्लाम के प्रवेश का द्वार खोल दिया। बहुत से अरब लोग यहीं बस गए और स्थानीय लोगों से संबंध स्थापित कर लिए।

सुबुक्तिगिन का पुत्र महमूद गजनी तुर्की गुलाम सेनापति था। इसने गजनी वंश की स्थापना की। महमूद गजनी ने 1000–1026 ई. के बीच भारत पर 17 बार आक्रमण किए। उसने मुल्तान, पंजाब, नगरकोट, थानेसर, मथुरा और कन्नौज तथा सोमनाथ (सौराष्ट्र) के मंदिरों पर आक्रमण कर लूट–पाट की।

शहाबुद्दीन मुहम्मद उर्फ मुहम्मद गोरी (1173–1206 ई.) ने गद्दी पर बैठते ही विस्तारवादी योजनाओं को भारत की ओर मोड़ दिया।

मुहम्मद गोरी ने 1175 ई. में मुल्तान, 1178 ई. में गुजरात, 1179–80 ई. में पेशावर और 1186 ई० में लाहौर को जीत लिया। 1190 ई. तक मुहम्मद गोरी मुल्तान, सिंध, पंजाब को जीतकर गंगा के दोआब की ओर आगे बढ़ा।

दिल्ली एवं गंगा के दोआब पर अधिकार करने के लिए मुहम्मद गोरी ने पृथ्वीराज चौहान से 1191 ई. में तराईन का प्रथम युद्ध किया। इसमें मुहम्मद गोरी पराजित हुआ। परन्तु शीघ्र ही उसने अपनी सेना को संगठित कर पृथ्वीराज चौहान को दूसरे तराईन युद्ध (1192 ई.) में पराजित कर दिया। मुहम्मद गोरी ने चन्दावर और तराईन के युद्ध के बाद भारत में तुर्की शासन की नींव डाली। उसके बाद वह अपने विश्वस्त सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक को भारत की सत्ता सौंप कर वापस लौट गया। इस प्रकार भारत में अरबों के आक्रमण से इस्लाम का आगमन हुआ।

पाठगत प्रश्न 5.1

1. हिजरत किसे कहा जाता है?

....

2. मुहम्मद-बिन-कासिम कौन था?

....

3. किसके आक्रमण से भारत में इस्लाम आया?

....

4. तराईन का युद्ध किस-किस के बीच हुआ?

....

5. भारत में तुर्की शासन की नींव किसने डाली?

....

5.2 दिल्ली सल्तनतः गुलामवंश की स्थापना

1194 ई. में मुहम्मद गोरी अपने सेनापति को भारत की सत्ता सौंपकर लौट गया। 1206 ई. में गोरी की मृत्यु के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक ने तुर्की शासन के रूप में भारत में दिल्ली सल्तनत की स्थापना की।

दिल्ली सल्तनत में प्रथम वंश के रूप में 'ममलूक' अर्थात् गुलाम वंश की स्थापना की। कुतुबुद्दीन ऐबक मुहम्मद गोरी का दास (गुलाम) था। इसीलिए इसके द्वारा स्थापित वंश को गुलाम वंश कहा गया है। गुलाम वंश दिल्ली सल्तनत में 1206 ई. से 1290 ई. तक रहा।

कुतुबुद्दीन ऐबक : यह गुलाम वंश का संस्थापक एवं उत्तर भारत का प्रथम मुस्लिम शासक था। इसे भारत में मुस्लिम शासन का वास्तविक संस्थापक कहा जाता है।

ऐबक ने भारतीय राजपूत सरदारों, ताजुद्दीन यल्दौज, नसीरुद्दीन कुबाचा तथा हरिचन्द्र को पराजित कर साम्राज्य का विस्तार किया। कुतुबुद्दीन ऐबक गुलाम होकर भी सेना के उच्च पद पर पहुँचा। अपनी नम्रता, उदारता एवं वफादारी के कारण वह 'लाख बक्श' के रूप में जाना जाता था। 1210 ई. में चौगान (पोलो) खेलते समय घोड़े से गिरकर ऐबक की मृत्यु हुई।

इल्तुतमिश (1210-1236 ई.) : कुतुबुद्दीन की मृत्यु के बाद उसके अयोग्य पुत्र आरामशाह को गद्दी पर बैठाया गया। इसका विरोध कर दिल्ली के तुर्की सरदारों ने ऐबक के दामाद एवं बदायूँ के शासक इल्तुतमिश

को दिल्ली सल्तनत का शासक बनाया। इल्तुतमिश ने आरामशाह की लाहौर से आई सेना को दिल्ली में पराजित किया।

इल्तुतमिश ने 1215 ई. में यल्दौज को और 1217 ई. में क्वाचा को पराजित किया। मंगोलों के आक्रमण से बचने के लिए ख्वारिज्म के शाह के पुत्र जियाउद्दीन माँगबरनी को शरण नहीं दी। इस तरह दिल्ली सल्तनत की मंगोलों से रक्षा की। इल्तुतमिश ने बंगाल, बिहार, रणथम्भौर, मन्दौर, जालौर, बयाना, ग्वालियर पर 1231 ई. तक अधिकार किया।

इल्तुतमिश ने शासन प्रबन्ध के लिए 40 अमीरों का समूह 'तुर्क–ए–चहलगानी' बनाया। बगदाद के खलीफा से 1229 ई. में इसकी वैधता प्राप्त की। इक्ता प्रणाली, सेना तथा सिक्कों की व्यवस्था को नया रूप दिया। दो सिक्के–चाँदी का टंका और ताँबे का जीतल चलवाया। इक्ता पाने वाले इक्तादार अपने अधीन क्षेत्रों से राजस्व वसूलते थे। बदले में सैन्य सेवा देकर कानून एवं व्यवस्था का पालन करते थे। दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संगठनकर्ता इल्तुतमिश को माना जाता है।

रजिया सुल्तान (1236–1240 ई.) : इल्तुतमिश ने अपने पुत्रों को शासन के अयोग्य समझकर अपनी पुत्री रजिया को उत्तराधिकारी घोषित किया। इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद उसका पुत्र रूकुनुद्दीन फिरोज कुछ अधिकारियों की मदद से दिल्ली का शासक बना। परन्तु जनता के समर्थन एवं सैन्य अधिकारियों की सहायता से रजिया दिल्ली सल्तनत की प्रथम महिला मुस्लिम सुल्तान बनी। रजिया सुल्तान ने गैर तुर्कों को कुलीन वर्ग का दर्जा दिया। अबीसीनियाई मलिक जमालुद्दीन याकूब को अमीर–ए–अखनूर नियुक्त किया। रजिया सुल्तान योग्य होने के बावजूद भी बहुत कम समय के लिए शासन कर पाई। महिला होना ही रजिया की सबसे बड़ी दुर्बलता थी। उस पर महिला की मर्यादा तोड़ने एवं याकूब के साथ करीबी संबंध का आरोप लगाया गया। वह सरदारों के साथ युद्ध में 1240 ई. में मारी गई।

नसीरुद्दीन महमूद (1246–66 ई.) : रजिया की मृत्यु के बाद 'चहलगानी' तुर्क सरदारों ने अपनी शक्ति बढ़ाकर बहरामशाह (1240–42) तथा मसूदशाह को सुल्तान बनाया। 1246 ई. में 'उलुग खान' नसीरुद्दीन शाह को शासक बनाकर खुद नाइब बन बैठा। यही उलुग खान बाद में बलबन हुआ। उसने अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए अपनी पुत्री का विवाह नसीरुद्दीन के साथ किया। बाद में बलबन ने नसीरुद्दीन को जहर देकर मार डाला और सिंहासन पर कब्जा कर लिया।

बलबन (1266–87 ई.) : उलुग खान 1266 ई. में बलबन के नाम से दिल्ली सल्तनत का शासक बना। उसने 'तुर्क–ए–चहलगानी' को समाप्त कर दिया। रक्त एवं लौह नीति द्वारा विद्रोहियों को शांत किया। मेवात, अवध, कौशल, कटेहर, बंगाल के विद्रोह को दबाया। अजमेर व नागौर पर विजय प्राप्त की। नए राजपद के सिद्धांत एवं कुलीन तथा सुल्तान के संबंधों को परिभाषित कर दिल्ली सल्तनत को मजबूत किया। दरबार में सिजदा (सलाम) तथा पाइबोस (राजा के कदम चूमना) की प्रथा पर जोर दिया। सैन्य विभाग दीवान–ए–अर्ज स्थापित किया। राजा एवं सत्ता की शक्ति के लिए वैभवपूर्ण दरबार बनाया। दरबार में हँसने, चुटकुले सुनने और शराब के सेवन पर प्रतिबन्ध लगा दिया। मंगोल आक्रमण से उत्तर भारत की रक्षा नहीं

करने और गैर तुर्कों को महत्त्वपूर्ण पदों से हटाने के कारण लोगों में असंतोष पैदा हुआ।

बलबन की मृत्यु 1287 ई. में हुई। उसके बाद कुलीन सरदारों ने उसके पोते कैकूबाद को शासक बनाया। परन्तु कैकूबाद का पुत्र तैमूर उसे हटाकर खुद शासक बन गया। बलबन के समय के सैन्य संचालक फिरोज जलालुद्दीन खिलजी ने तैमूर की हत्या कर गुलामवंश को समाप्त कर दिया और खिलजी वंश के रूप में नए वंश की शुरुआत दिल्ली सल्तनत में की।

पाठगत प्रश्न 5.2

1. कुतुबुद्दीन ऐबक कौन था?

   ....

2. कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु किस प्रकार हुई?

   ....

3. 'उलुग खान' किस नाम से शासक बना?

   ....

4. दिल्ली सल्तनत की प्रथम महिला मुस्लिम शासक कौन थी?

   ....

5. गुलाम वंश को किसने समाप्त किया?

   ....

6. 'पाइबोस' क्या है?

   ....

5.3 आर्थिक सुधार-कृषि, बाजार व्यवस्था

दिल्ली सल्तनत में कृषि-व्यवस्था की ओर कमोबेश सभी शासकों ने ध्यान दिया, क्योंकि राज्य की आय का मुख्य स्रोत भू-राजस्व था। भू-राजस्व में वृद्धि के लिए काफी उपाय किए गए। कृषि-व्यवस्था के विकास में तुगलक वंश के शासकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। कृषि के विकास के लिए उन्होंने नए विभाग 'दीवान-ए-कोही' की स्थापना की। किसानों को बीज एवं अन्न के द्वारा सहायता दी गई। फसल बरबाद होने, सूखा तथा अकाल पड़ने पर किसानों को ऋण भी दिया जाता था।

फिरोज तुगलक ने नहरों का निर्माण करवाया। अनेक बाग लगवाए। परती भूमि को कृषि क्षेत्र में बदला गया। उसमें विभिन्न फसलें उगाईं जाती थीं। सिंचित क्षेत्र में वर्ष में दो फसलें उगाँ जाती थीं। चावल, गेहूँ, दाल, जौ, बाजरा आदि के अतिरिक्त फल, सब्जियाँ तथा मसालों की खेती की जाती थी। अधिकांश कृषि वर्षा पर आधारित थी। सिंचाई के साधनों एवं खाद का प्रयोग फसल की पैदावार बढ़ाने के लिए किया जाता था। सिंचाई कुओं, नदियों, तालाबों, नहरों और झीलों से की जाती थी। नकदी फसलों में गन्ना, कपास, अफीम व रेशम की खेती की जाती थी।

दिल्ली सल्तनत में बाजार-व्यवस्था के लिए खिलजी वंश का शासक अलाउद्दीन खिलजी विशेष रूप से प्रसिद्ध हुआ। अलाउद्दीन खिलजी ने जलालुद्दीन खिलजी को सत्ता से हटाकर 1296 ई. से 1316 ई. तक दिल्ली सल्तनत पर शासन किया। अलाउद्दीन के प्रशासन की नीति बाजार-व्यवस्था पर नियंत्रण काफी महत्त्वपूर्ण थी।

बाजार-व्यवस्था और मूल्य-नियंत्रण के लिए अलाउद्दीन खिलजी ने अनेक उपाय किए। विभिन्न वस्तुओं के अलग बाजार बनाए, जैसे- अनाज-बाजार, कपड़ा-बाजार आदि। इसके अतिरिक्त घोड़ों, जानवरों तथा गुलामों/दासों के बाजार भी थे।

अलाउद्दीन ने बाजार की देखरेख के लिए 'शहना-ए-मंडी' नियुक्त किया। 'शहना-ए-मंडी' के अधीन 'बरीद' (सूचना अधिकारी) तथा मुहियन (गुप्तचर) काम करते थे। ये बाजार की दैनिक जानकारी उपलब्ध कराते थे।

घोड़ों के मूल्य-नियंत्रण का उद्देश्य सेना के लिए कम मूल्य पर घोड़ों की आपूर्ति सुनिश्चित करना था। इसी तरह, आवश्यक वस्तुओं का मूल्य व आपूर्ति सैनिक आवश्यकता को ध्यान में रखकर निर्धारित की गई थी। माप-तौल प्रणाली को सख्ती से लागू किया गया था।

विकास के काम, कला व संस्कृति

दिल्ली सल्तनत की स्थापना मुहम्मद गोरी के सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1206 ई. में की थी। दिल्ली सल्तनत पर गुलाम, खिलजी, तुगलक, सैयद और लोदी वंश ने 1526 ई. तक शासन किया। सल्तनकाल में धर्म, साहित्य, भाषा, संगीत, चित्रकला, वास्तुशिल्प के क्षेत्र में विकास के महत्त्वपूर्ण कार्य हुए।

संत ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती, गोरी के आक्रमण के समय भारत आए। वे 1206 ई. में अजमेर चले गए। वहाँ 1235 ई. में उनकी मृत्यु हो गई। उन्होंने भारत में सूफी विचारधारा का प्रसार किया। हिन्दू-मुस्लिमों के बीच मिली-जुली संस्कृति का विकास किया। चिश्ती के अतिरिक्त बाद में सोहरावर्दी, नक्शबन्दी, कादिरी जैसे सूफी मत भी भारत में प्रचलित हुए।

रामानन्द, कबीर, चैतन्य, नानक, रैदास आदि प्रमुख संतों ने निर्गुण, सगुण भक्ति, वैष्णववाद और शैववाद का विकास किया। दक्षिण भारत में आलवार और नायनार संतों ने सामाजिक-धार्मिक बुराइयों को दूर किया।

दिल्ली सल्तनत में फारसी भाषा को राजकीय संरक्षण मिला। इससे फारसी भाषा-साहित्य का विकास हुआ। जबकि संस्कृत के विकास में गिरावट आई परन्तु हेमचन्द्र सूरी और चैतन्य ने संस्कृत में रचनाओं का सृजन

किया। चम्पू काव्य-शैली के रूप में नई लेखन-शैली का विकास हुआ। अमीर खुसरो ने 'किराना-उस-उदैन', 'मिफ्ता-उल-फुतुह', 'तुगलकनामा', 'खजाइन-उल-फुतुह' नामक ग्रंथ फारसी साहित्य में लिखे। 'महाभारत' और 'राजतरंगिणी' का अनुवाद फारसी में भी हुआ। सूफी साहित्य 'मलफुजात' के रूप में लिखा गया। उर्दू भाषा का विकास सल्तनत काल में हुआ। क्षेत्रीय भाषा व साहित्य के रूप में बंगला, असमिया, उड़िया, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़ आदि का विकास हुआ।

चित्र 5.2 : कबीर

चित्र 5.3 : रहीम

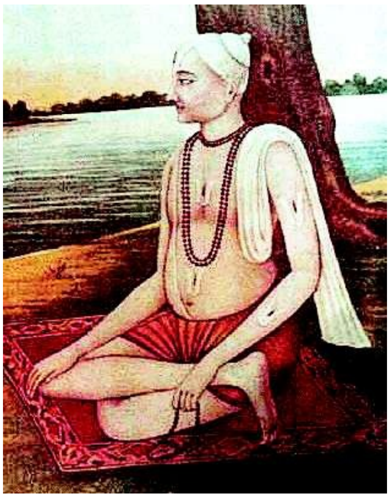

चित्र 5.4 : तुलसीदास

चित्र 5.5 : रैदास

ऐमान, गोरा, सनम जैसे आधुनिक राग और कव्वाली का प्रचलन सल्तनत काल में अमीर खुसरो ने करवाया। सितार, भारतीय वीणा और फारसी तम्बूरा का मिश्रण था। वृन्दावन के स्वामी हरिदास और उनके शिष्य तानसेन ने संगीत को खूब आगे बढ़ाया। रबाब और सारंगी तुर्कों के साथ भारत आए।

सल्तनत काल में भित्ति चित्र, मेहराबी दीवार, परी चित्रकला, पाण्डुलिपियों का कुरानी सुलेखन चित्रकला के रूप में विकसित हुआ। गुजरात, मालवा तथा जौनपुर 15वीं शताब्दी में चित्रकला के केन्द्र थे।

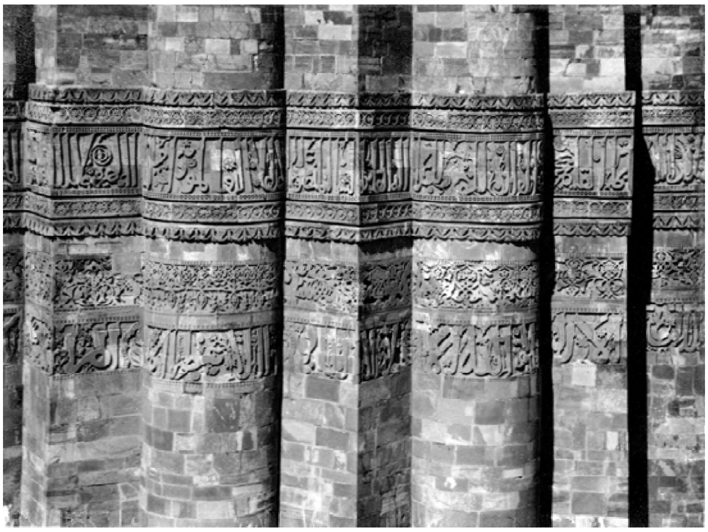

चित्र 5.6 : कुतुबमीनार व उसमें नक्काशी

सल्तनतकाल में मेहराब और गुम्बद का उपयोग वास्तुशिल्प में हुआ। चूना, सीमेन्ट, पानी और रेत के मिश्रण से भवन बनने लगे। भवन निर्माण की तकनीक बदल गई। कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद (1198 ई.), कुतुबमीनार (1199-1235 ई.), ढाई दिन का झोपड़ा (1200 ई.), इल्तुतमिश का मकबरा भारतीय-इस्लामिक शैली का प्रारंभिक रूप हैं। संगमरमर की नक्काशी तथा लाल पत्थरों की सजावट, अनगढ़ पत्थरों का उपयोग, चतुष्कोणीय (चार कोनों वाले) मेहराब, नोंकदार व अष्टकोणीय (आठ कोनों वाले) गुम्बद आदि सल्तनत काल के वास्तुशिल्प की विशेषताएँ हैं।

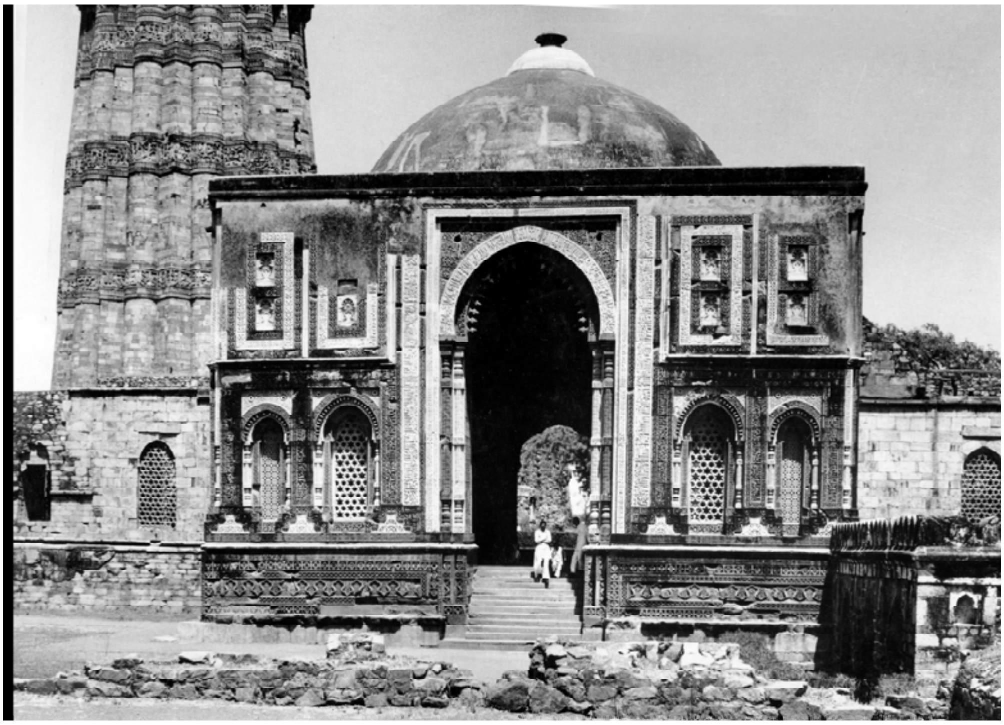

चित्र 5.7 : अलाई दरवाजा

पाठगत प्रश्न 5.3

1. सल्तनत काल में सिंचाई के कौन से साधन थे?

   ....

2. फिरोजशाह तुगलक ने कृषि के क्षेत्र में कौन से सुधार किए?

   ....

3. मुहियन कौन थे और क्या करते थे?

   ....

4. ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती भारत कब आए?

   ....

5. तानसेन किसके शिष्य थे?

   ....

आपने क्या सीखा

- अरब प्रदेश में इस्लाम का उदय हुआ। इसके संस्थापक पैगम्बर मोहम्मद थे। अबुबक्र, उमर तथा उस्मान खलीफाओं द्वारा इस्लाम को विश्व में फैलाया गया। मुहम्मद-बिन-कासिम के 712 ई. में सिन्ध आक्रमण एवं विजय द्वारा भारत में इस्लाम का आगमन हुआ।
- मुहम्मद गोरी के सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1206 ई. में तुर्की-शासन के रूप में दिल्ली सल्तनत स्थापित की, जो 1290 ई. तक ममलुक वंश के रूप में चली। इल्तुतमिश, रजिया सुल्तान, नसीरुद्दीन महमूद और बलबन इसके महत्त्वपूर्ण शासक हुए।
- इल्तुतमिश ने 'इक्ता' प्रणाली तथा जीतल एवं टंका के रूप में सिक्के चलवाए। इसकी पुत्री रजिया सुल्तान प्रथम महिला मुस्लिम शासक बनी।
- बलबन (उलुग खान) ने रक्त और लौह नीति द्वारा शासन किया। विद्रोहों को सख्ती से कुचल दिया और तुर्क-ए-चेहलगानी को समाप्त किया। बलबन की मृत्यु के बाद खिलजी वंश की शुरुआत हुई।
- सल्तनत काल में कृषि-व्यवस्था पर तुगलक-वंश के शासक मुहम्मद-बिन- तुगलक एवं फिरोजशाह तुगलक ने विशेष ध्यान दिया। अलाउद्दीन खिलजी ने बाजार-व्यवस्था पर नियंत्रण स्थापित किया।

- सल्तनत काल में हिन्दू-मुस्लिम मिली-जुली संस्कृति का विकास सूफी और भक्ति आन्दोलन से हुआ। भाषा-साहित्य, संगीत, चित्रकला एवं वास्तुशिल्प में भी उल्लेखनीय प्रगति हुई। भारतीय-इस्लामी कला शैली दिल्ली सल्तनत काल की मुख्य विशेषता है।

आइए, करके देखें

दिल्ली सल्तनत काल के गुलाम वंश के शासकों के चित्र विभिन्न स्रोतों से इकट्ठा करें। उनमें से किसी एक की जीवनी और उपलब्धियों पर चर्चा करें।

पाठांत प्रश्न

1. हजरत मोहम्मद ने यसरिब शहर का नाम बदलकर क्या रखा?

   (क) मक्का (ख) मदीना

   (ग) अरब (घ) एशिया

2. महमूद गजनी ने भारत पर कितनी बार आक्रमण किया?

   (क) 11 (ख) 7

   (ग) 21 (घ) 17

3. रजिया सुल्तान किसकी पुत्री थी?

   (क) इल्तुतमिश (ख) बलबन

   (ग) कुतुबुद्दीन ऐबक (घ) मुहम्मद गोरी

4. **सही शब्द चुनकर खाली जगह भरिए-**

   पृथ्वीराज चौहान, बलबन, सूफी, मुसलमान, गजनी

   (अ) पैगम्बर मुहम्मद साहब के समर्थक .... कहलाए।

   (ब) महमूद गजनी ने .... वंश की स्थापना की।

   (स) तराईन का युद्ध मुहम्मद गोरी और .... के बीच हुआ।

   (द) उलुग खान .... के नाम से दिल्ली सल्तनत का शासक बना।

   (य) संत ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती ने भारत में .... विचारधाराका प्रसार किया।

5. मुहम्मद-बिन-कासिम कौन था?

   ....

6. सल्तनत काल में राज्य की आय का मुख्य स्रोत क्या था?

....

7. गुलाम वंश की स्थापना किसने की थी?

....

8. भक्ति आंदोलन के प्रमुख संतों के नाम लिखिए।

....

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्न

5.1 1. छोड़ना या त्यागना। 2. उम्मैयद खलीफा का सेनापति।

3. मुहम्मद-बिन-कासिम/अरबों के आक्रमण से।

4. मुहम्मद गोरी और पृथ्वीराज चौहान के बीच। 5. मुहम्मद गोरी ने।

5.2 1. मुहम्मद गोरी का दास और सेनापति। 2. चौगान खेलते हुए घोड़े से गिरकर।

3. बलबन। 4. रजिया सुल्तान।

5. फिरोज जलालुद्दीन खिलजी ने। 6. राजा के कदम चूमने की प्रथा।

5.3 1. कुआँ, तालाब, नहर, नदियाँ, झील।

2. परती भूमि को कृषि-क्षेत्र में बदला, नहरों का निर्माण कराया।

3. गुप्तचर थे। ये बाजार की दैनिक जानकारी उपलब्ध कराते थे।

4. मुहम्मद गोरी के आक्रमण के समय। 5. स्वामी हरिदास के

पाठांत प्रश्न

1. (अ) मदीना
2. (ब) 17
3. (स) इल्तुतमिश
4. अ. मुसलमान ब. गजनी स. पृथ्वीराज चौहान
   द. बलबन य. सूफी
5. उम्मैयद खलीफा का सेनापति।
6. भू-राजस्व।
7. कुतुबुद्दीन ऐबक ने।
8. रामानंद, कबीर, चैतन्य, नानक, रैदास।

जाँचपत्र-1 (पाठ 0 से 5)

1. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए–

(क) आदिमानव ने नव पाषाणकाल में पत्थर के तेज, ... और धारदार औजारों को बनाया। (नुकीले / भोथरे)

(ख) पुरापाषाण काल में आदिमानव .... में रहता था। (समूह / अकेले)

(ग) सिंधु घाटी सभ्यता का दूसरा नाम .... है। (हड़प्पा / मेसोपोटामिया)

(घ) .... संगीत से संबंधित है। (ऋग्वेद / सामवेद)

2. सही वाक्य पर ✓ और गलत पर ✗ का निशान लगाइए–

(क) उत्तरवैदिक काल में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार नहीं हुआ। ( )

(ख) आर्य लोगों के घर लकड़ी, घास और मिट्टी के लेप के बने होते थे। ( )

(ग) महाभारत काल में समाज में गोत्र प्रणाली थी। ( )

3. मगध का संस्थापक कौन था?

(क) बिम्बिसार (ख) अजातशत्रु

(ग) उदयन (घ) इनमें से कोई नहीं

4. ह्वेनसांग ने अपने यात्रा वृत्तांत 'सी-यू-की' में किसे महान शासक बताया है?

(क) अशोक (ख) कनिष्क

(ग) हर्षवर्धन (घ) समुद्रगुप्त

5. सही मिलान कीजिए–

(क) तराईन का प्रथम युद्ध	(i) कुतुबद्दीन ऐबक
(ख) गुलाम वंश का संस्थापक	(ii) 1191 ई.
(ग) बाजार-व्यवस्था और मूल्य नियंत्रण	(iii) अमीर खुसरो
(घ) कव्वाली का प्रचलन	(iv) अलाउद्दीन खिलजी

6. नव पाषाणकाल में मानव जीवन में आए दो बदलाव लिखिए।

....

7. सोलह महाजनपदों में मगध के शक्तिशाली होने के दो कारण लिखिए।

....

8. पैगम्बर मोहम्मद का जन्म किस कबीले में हुआ था?

....

9. कनिष्क की दो उपलब्धियाँ लिखिए।

....

10. प्राचीन अंतिम भारतीय महान शासक के रूप में हर्षवर्धन के व्यक्तित्त्व की तीन विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

....

....

....

उत्तरमाला

1. (क) नुकीले (ख) समूह

   (ग) हड़प्पा (घ) सामवेद

2. (क) गलत (ख) सही (ग) सही

3. (क) बिम्बिसार

4. (ग) हर्षवर्धन

5. (क) (ii), (ख) (i), (ग) (iv), (घ) (iii)

6. खाना पकाकर खाना सीखा, आग से ठंड से बचना और जंगली जानवर से सुरक्षा करना सीखा, मानव सभ्य होने लगा।

7. लोहे की अधिकता तथा उसका उपयोग, जंगलों से प्राप्त हाथियों का सेना में प्रयोग, उपजाऊ मिट्टी को होना, शक्तिशाली शासक।

8. कुरैशी कबीले में।

9. चतुर्थ बौद्ध सभा बुलाना, बौद्ध धर्म का प्रचार करना।

10. वह भारतीय प्राचीन अंतिम महान शासक था, उसने उत्तर भारत को एक सूत्र में बाँधा और वह विद्वानों का संरक्षक था। कन्नौज से नर्मदा तक राज्य का विस्तार किया।

6

मुगल व उनके बाद

पानीपत की पहली लड़ाई 1526 ई. में हुई। यह लड़ाई मुगल शासक बाबर और इब्राहिम लोदी के बीच हुई। पानीपत की लड़ाई में बाबर ने इब्राहिम लोदी को हरा दिया। बाबर ने पानीपत की लड़ाई में विजय के बाद भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना की। मुगल शासकों ने मनसब प्रथा, भू-राजस्व प्रणाली का विकास किया। भारतीय राजपूतों के साथ मित्रता की। मुगल शासकों ने राजपूतों से वैवाहिक संबंध बनाए। हिन्दू-मुस्लिम एकता पर जोर दिया। अकबर ने शिशु कन्या-वध एवं बाल विवाह को समाप्त करने के लिए कदम उठाए। मुगलों ने कला एवं संस्कृति के विकास में योगदान दिया। मुगलों का शिवाजी एवं उनके उत्तराधिकारियों के साथ संघर्ष हुआ। मुगल-राजपूत संबंध ने मुगल शासन को मजबूती प्रदान की।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- मुगलों का भारत में आगमन और मुगल साम्राज्य की स्थापना का वर्णन कर सकेंगे;
- मुगलों की राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक उपलब्धियाँ तथा मुगलकालीन कला व संस्कृति की व्याख्या कर सकेंगे;
- मराठा साम्राज्य और उनके मुगलों के साथ संबंध को स्पष्ट कर सकेंगे और
- राजपूत इतिहास तथा राजपूतों के मुगलों के साथ संबंध की व्याख्या कर सकेंगे।

6.1 मुगलों का आगमन और मुगल साम्राज्य की स्थापना

सन् 1494 ई. में बाबर के पिता उमर शेख मिर्जा की मृत्यु हुई। इसके बाद बाबर फरगाना की गद्दी पर बैठा। उस समय उसकी उम्र 12 वर्ष थी। अभिजात्य वर्ग ने उसका विरोध किया। मध्य एशिया में अस्थिरता के कारण तथा उजबेगियों के हाथों हार ने बाबर को भारत की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया। सन् 1517 ई. में बाबर ने भारत की ओर बढ़ने का निश्चय किया। उस समय छोटे-छोटे राजाओं में फूट के कारण भारत में राजनैतिक अस्थिरता थी। पंजाब के सूबेदार दौलत खान लोदी और मेवाड़ के शासक राणा सांगा ने भारत पर आक्रमण करने के लिए बाबर को उत्साहित किया।

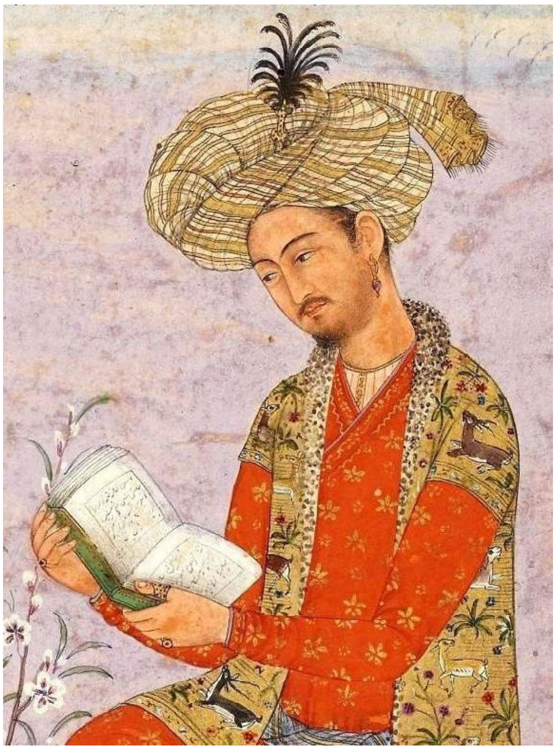

चित्र 6.1 : बाबर

बाबर ने भीरा को 1519-20 ई. में जीता। इसके बाद सियालकोट (1520 ई.) तथा लाहौर (1524 ई.) को जीतता हुआ वह 1526 ई. में पानीपत पहुँचा। सन् 1526 ई. में पानीपत का प्रथम युद्ध हुआ। इस युद्ध में बाबर की सेना ने इब्राहिम लोदी को हराकर दिल्ली सल्तनत को समाप्त किया। बाबर ने युद्ध की रूमी (ऑटोमन) पद्धति एवं तुगलमा विधि का प्रयोग किया। तोपों एवं घोड़ों के प्रयोग से मात्र 12,000 सैनिकों की सहायता से बाबर ने इब्राहिम लोदी के 1,00,000 सैनिकों को हरा दिया। बाबर ने दिल्ली और आगरा पर अधिकार कर सम्पत्ति पर कब्जा किया। लूट के धन को बाबर ने सेनापति और सैनिकों में बाँट दिया। बाबर ने भारत में मुगलवंश की नींव डाली। बाबर के सामने शुरू में अनेक कठिनाइयाँ थीं, जैसे

1. कुलीन वर्ग और सेनापति अजीब वातावरण के कारण वापस मध्य एशिया लौटना चाहते थे।

2. मेवाड़ शासक राणा सांगा मुगल सेना को भगाने के लिए सेना तैयार कर रहे थे।

3. अफगानी शासक बंगाल, बिहार में अपनी खोई शक्ति को फिर से प्राप्त करने में लगे थे।

इन समस्याओं का सामना बाबर ने कुशलतापूर्वक किया। बाबर ने सेनापति एवं कुलीनों को भारत में रुकने के लिए मना लिया। हुमायूँ को अफगानियों का सामना करने के लिए भेजा।

राणा सांगा ने जालौर, सिरोही, डुंगरपुर, अम्बेर, मेड़ता आदि राज्यों के राजपूतों के साथ मिलकर सैन्य संगठन बनाया। चन्देरी के मेदिनी राय, मेवात के हसन खान और सिकन्दर लोदी के पुत्र महमूद लोदी ने भी राणा सांगा को सैन्य सहयोग देना स्वीकार किया।

चित्र 6.2 : राणा सांगा

राणा सांगा को विश्वास था कि बाबर आक्रमण के बाद लूट-पाट कर वापस काबुल लौट जाएगा। तब वह दिल्ली पर अधिकार कर लेगा। लेकिन बाबर ने भारत में रहने का निर्णय लिया।

बाबर ने मुगल वंश को स्थापित करने के लिए राणा सांगा की सैनिक शक्ति को समाप्त करने का फैसला किया। इस कारण खानवा के मैदान में 1527 ई. में बाबर और राणा सांगा के बीच युद्ध हुआ। बेहतर युद्ध प्रणाली, युद्ध तकनीक और कुशल नेतृत्व से बाबर ने खानवा युद्ध में जीत हासिल की। 1528 ई. में बाबर ने चन्देरी के युद्ध में मेदिनी राय को पराजित किया। पानीपत और खानवा के युद्ध में विजय महत्त्वपूर्ण थी, परन्तु अब भी विरोध के स्वर मौजूद थे।

1530 ई. में बाबर की मृत्यु होने पर उसके पुत्र हुमायूँ ने शासन सँभाला। हुमायूँ के सामने असंगठित प्रदेश तथा प्रशासन था। उसे अभिजात्य वर्ग का समर्थन भी कम मिलता था। हुमायूँ को बिहार में शेरखान तथा

गुजरात में बहादुरशाह से चुनौती मिल रही थी। शेरखान ने हुमायूँ को चौसा (1539 ई०) और कन्नौज (1540 ई०) के युद्ध में पराजित कर भारत से भगा दिया। हुमायूँ ने, ईरान के शासक की पुत्री हामीदा बानू से विवाह किया और पुन: सैन्य शक्ति बटोरी। 1555 ई. में हुमायूँ ने अफगानी शासक को परास्त कर फिर से दिल्ली और आगरा पर अधिकार कर मुगलवंश को स्थापित किया। परन्तु 1556 ई. में पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरकर हुमायूँ की मृत्यु हो गई।

हुमायूँ के पुत्र अकबर ने 13 वर्ष की उम्र में गद्दी सँभाली। 1556 ई. में पानीपत के दूसरे युद्ध में अकबर ने अफगानी शासक के मंत्री हेमू को पराजित किया। इस तरह उसने मुगल वंश को न केवल फिर से स्थापित किया, बल्कि मजबूत भी किया। इतना मजबूत, कि जहाँगीर, शाहजहाँ, औरंगजेब जैसे महान शासकों और उनके बाद के शासकों के रूप में मुगलवंश का शासन भारत में 1857 ई. तक रहा।

पाठगत प्रश्न 6.1

1. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए

खानवा, अकबर, हुमायूँ, 1494 ई., बाबर, हेमू

(क) बाबर .... में 12 वर्ष की उम्र में पिता की मृत्यु के बाद गद्दी पर बैठा।

(ख) पानीपत का दूसरा युद्ध 1556 ई. में .... और .... के बीच हुआ।

(ग) .... के मैदान में 1527 ई. में बाबर और राणा सांगा के बीच युद्ध हुआ।

(घ) 1556 ई. में पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरकर .... की मृत्यु हुई।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

(क) बाबर कहाँ का शासक था? वह कब गद्दी पर बैठा?

....

(ख) बाबर ने युद्ध की कौन सी विधि का प्रयोग भारत में किया था?

....

(ग) पानीपत का पहला युद्ध कब और किसके बीच हुआ?

....

(ध) हुमायूँ कौन था? उसकी मृत्यु कैसे हुई?

....

6.2 राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक उपलब्धियाँ तथा कला व संस्कृति

बाबर ने 1526 ई. में भारत में मुगलवंश की स्थापना की। मुगल वंश की स्थापना से भारत में राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन की एक नई प्रक्रिया शुरू हुई।

मुगलवंश की स्थापना के समय और अकबर के शुरू के दिनों में मुगलों के सामने कई समस्याएँ थीं। राजपूत मुख्य रूप से राजस्थान में केंद्रित थे, परन्तु वे स्वतंत्र रूप से सूबेदारों और राजाओं के रूप में फैले थे। उन पर नियंत्रण आवश्यक था। बिहार, बंगाल और गुजरात में अफगानों की राजनैतिक शक्ति को समाप्त करना था। काबुल और कंधार पर मुगल गुटों का शासन था, जिनकी अकबर से दुश्मनी थी, उनसे भी निपटना था। दक्कन के मुसलमान राज्यों पर भी अकबर को नियंत्रण स्थापित करना था। इनमें खानदेश, अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुंडा तथा दक्षिण के अन्य राज्य शमिल थे।

चित्र 6.3 : अकबर

अकबर ने इन राजनैतिक समस्याओं के समाधान के लिए विस्तारवादी नीति अपनाई। अकबर ने अपनी महत्त्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए राजपूतों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने का प्रयास किया। उसने आमेर (अम्बेर) के राजा भारमल की पुत्री से विवाह किया। राजपूतों को सेना और प्रशासन में नौकरी दी। मेवाड़ के साथ संघर्ष कर उसे जीत लिया। मारवाड़, बीकानेर, जैसलमेर, रणथंभौर और कालिंजर पर विजय दर्ज की। 1576 ई. में हल्दीघाटी के युद्ध में राणा प्रताप को हराकर अकबर ने राजपूतों की चुनौती को समाप्त कर दिया। मालवा, ग्वालियर और गोंडवाना प्रदेश पर अकबर ने पहले ही 1564 ई. में कब्जा कर लिया था।

गुजरात, बंगाल और बिहार में अफगानियों के विरुद्ध अकबर ने 1572 ई. में राजकुमार इत्तिमाद खान के आमंत्रण पर लड़ाई शुरू की। सूरत, अहमदाबाद समेत गुजरात को जीत कर मिर्जा अजीज कोका को सौंप

दिया। 1574 ई. में अकबर ने मुनीम खान की सहायता से हाजीपुर, पटना, गौड़ (बंगाल) को जीतकर बिहार और बंगाल पर नियंत्रण स्थापित किया। 1592 ई. तक मानसिंह ने उड़ीसा को भी मुगलों के नियंत्रण में ले लिया। जागीरदार और बागियों ने विद्रोह कर अकबर के भाई हकीम मिर्जा को काबुल में राजा घोषित कर दिया। टोडरमल, फरीद बख्शी, अजीज कोका, शाहबाज खान की सहायता से बिहार, बंगाल और आस-पास के विद्रोहों को कुचल दिया गया।

चित्र 6.4 : महाराणा प्रताप

पंजाब और उत्तर पश्चिम प्रान्त में मिर्जा हाकिम ने हमला कर दिया। तब अकबर स्वयं लाहौर की ओर बढ़ा। काबुल पहुँचकर वहाँ का कार्यभार अपनी बहन बख्तूननिसा बेगम को सौंपा और बाद में मानसिंह को वहाँ का सूबेदार बनाया। उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में रौशनाईयों के विद्रोह को दबाने में बीरबल की मृत्यु हो गई। टोडरमल और मानसिंह विद्रोह को दबाने में सफल हुए। 1586 ई. में कश्मीर पर तथा 1595 ई. तक मुल्तान, थट्टा सहित पूरे उत्तरी-पश्चिमी प्रान्त पर मुगलों की सत्ता स्थापित हो गई।

1591 ई. से 1598 ई. तक मुगलों का अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुंडा तथा दक्कनी प्रदेश असीरगढ़, बुरहानपुर, बरार आदि पर अधिकार हो गया। बाद में जहाँगीर ने शासन सँभाला। शाहजहाँ और औरंगजेब के काल में मुगल शासन का विस्तार 21 प्रान्तों में हो गया। अकबर के समय में यह 15 प्रान्तों में था।

मुगल प्रशासन मनसबदारी व्यवस्था पर आधारित था। प्रशासन, केन्द्रीय और प्रान्तीय शासन में बँटा हुआ था। वजीर, दीवान, मीर बख्शी, सद्र-उस-सुदूर, मीर सामाँ की सहायता से राजा शासन करता था। प्रान्तीय शासन सूबेदारों के अधीन था। स्थानीय शासन की सबसे छोटी इकाई गाँव था, जो फौजदार और अमलगुजार के अधीन था। मुकद्दम गाँव का मुखिया था तथा पटवारी राजस्व रिकॉर्ड रखता था।

आर्थिक गतिविधियों में कृषि, पशुपालन, व्यापार और उद्योग-धंधे थे। उद्योग अधिकांशतः कृषि पर आधारित थे। राज्य की आय का मुख्य स्रोत भूमिकर था। इसलिए भू-राजस्व प्रणाली का व्यवस्थित रूप अकबर ने टोडरमल की सहायता से तैयार करवाया। इसे आईन-ए-दहसाला भी कहते हैं। भूमि को पोलज, पड़ौती, चचर, बंजर में बाँटा गया। औसत उपज के आधार पर फसल उत्पादन का एक तिहाई (1/3 भाग) भू-राजस्व लिया जाता था। सूती वस्त्रों, रेशमी वस्त्रों, आभूषणों का निर्माण भी किया जाता था।

व्यापार अन्तर्देशीय और विदेशों से भी होता था। सूरत, भृगुकच्छ महत्त्वपूर्ण बंदरगाह थे, जहाँ से निर्यात किया जाता था। पश्चिमी देशों से सोना-चाँदी भारत में आता था। कृषि में अधिशेष उत्पादन और व्यापार की लाभप्रद अवस्था से मुगलों की आर्थिक स्थिति अच्छी थी।

समाज में हिन्दू-मुसलमान एकता और सद्भाव मुगलों की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। अकबर ने हिन्दुओं के प्रति सहिष्णुता की नीति अपनाई। इससे उसे हिन्दुओं, विशेषकर राजपूतों का सहयोग मिला और मुगलों को इसका लाभ मिला। जजिया कर, शिशु कन्या वध और बाल-विवाह को समाप्त करने के लिए अकबर ने कदम उठाए।

चित्र 6.5 : ताजमहल

सांस्कृतिक रूप से मुगलों की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है हिन्दू-मुस्लिम समन्वित संस्कृति का विकास। स्थापत्य कला में शाहजहाँ के काल को तथा चित्रकला में जहाँगीर के काल को स्वर्णकाल कहा जाता है। शाहजहाँ ने दिल्ली में लालकिला और जामा मस्जिद तथा आगरा में मोती मस्जिद और ताजमहल का निर्माण करवाया।

ताजमहल में पित्रादुरा का प्रयोग किया गया है। मुगलकाल में भव्य इमारतों, मकबरों, मस्जिदों, किलों, मेहराबों, गुम्बदों, मकबरों का निर्माण हुआ। इस्लामी शैली के साथ स्थानीय कला शैली को भी मुगल कला में शामिल किया गया।

चित्र 6.6 : लाल किला

मुगल काल में संगीत, कला तथा भाषा साहित्य को भी बढ़ावा दिया गया। हरिदास, तानसेन, बैजू बावरा, सदारंग-अदारंग महत्त्वपूर्ण संगीतज्ञ थे। बाबर ने तुर्की भाषा में अपनी आत्मकथा 'तुजुके-बाबरी' लिखी है। मुगल काल में फारसी भाषा को प्रोत्साहन मिला। चित्रकला में मुगलों की बिहजाद शैली के साथ अनेक क्षेत्रीय चित्रकला शैलियाँ विकसित हुई थीं।

पाठगत प्रश्न 6.2

1. सही वाक्य पर ✓ तथा गलत वाक्य पर × का निशान लगाइए:

(क) गुजरात, बंगाल और बिहार में अफगानियों के विरुद्ध अकबर ने 1572 ई. में लड़ाई शुरू की। ☐

(ख) 1592 ई. तक मानसिंह ने उड़ीसा को मुगल नियंत्रण में ले लिया। ☐

(ग) मुकद्दम राजस्व रिकॉर्ड रखता था। ☐

(घ) राज्य की आय का मुख्य स्रोत व्यापार कर था। ☐

(च) अकबर की भू-राजस्व प्रणाली टोडरमल ने तैयार की। ☐

2. मुगलकालीन स्थापत्य की विशेषताएँ हैं;

(क) पित्रादुरा (ख) गुम्बद का प्रयोग

(ग) संगमरमर का प्रयोग (घ) उपरोक्त सभी

3. मुगल काल में भू-राजस्व कितना लिया जाता था?

(क) 1/3 भाग (ख) 1/4 भाग

(ग) 1/5 भाग (घ) 1/6 भाग

4. बाबर ने अपनी आत्मकथा 'तुजुके बाबरी' किस भाषा में लिखी थी?

(क) फारसी (ख) संस्कृत

(ग) तुर्की (घ) इनमें से कोई नहीं

5. मुगल प्रशासन किस पर आधारित था?

(क) जागीरदारी (ख) इक्तादारी

(ग) मनसबदारी (घ) इनमें से कोई नहीं

6.3 मराठा साम्राज्य और उनके मुगलों के साथ संबंध

17वीं शताब्दी में शिवाजी के नेतृत्व में मराठा राज्य का उदय हुआ। शिवाजी के पिता का नाम शाहजी भोंसले था। वे सेना में नौकरी करते थे। शिवाजी का बचपन दादा कोंडदेव और माता जीजाबाई के संरक्षण में बीता। शिवाजी अपने गुरुजी समर्थ रामदास से स्वराष्ट्र के लिए अभिप्रेरित हुए और मराठा राज्य की स्थापना के लिए मुगलों से संघर्ष किया। शिवाजी ने 1656 ई. में आक्रामक कार्रवाइयाँ शुरू कीं। उन्होंने जावली और बीजापुर पर आक्रमण कर विजय प्राप्त की। 1659 ई. में शिवाजी ने चतुराई से अफजल खाँ की हत्या कर दी। 1662 ई. में बीजापुर के सुल्तान ने समझौते द्वारा शिवाजी को स्वतंत्र शासक मान लिया। शिवाजी ने मुगल प्रदेशों पर हमला करना शुरू किया। औरंगजेब ने शाइस्ता खान को भेजकर 1665 ई. में पुरन्दर की संधि

करवाई। इस संधि के द्वारा शिवाजी 35 में से 23 किले मुगलों को वापस करने के लिए तैयार हो गए। शेष 12 किले, जिनकी वार्षिक आय एक लाख थी, शिवाजी के पास रहने दिए गए। संधि के दौरान ही शिवाजी को आगरा आने का आमंत्रण दिया गया। परन्तु आगरा के दरबार में पहुँचने पर उनसे दुर्व्यवहार हुआ, जिसका विरोध करने पर उन्हें बन्दी बना लिया गया। परन्तु 1666 ई. में बंदीगृह से भागकर वे रायगढ़ पहुँचे। उन्होंने मुगलों को दिए गए किलों को फिर से जीत लिया। 1670 ई. में उन्होंने सूरत पर पुनः आक्रमण किया।

चित्र 6.7 : शिवाजी

1674 ई. में शिवाजी ने रायगढ़ को अपनी राजधानी बनाया और अपना राज्याभिषेक करवाकर छत्रपति की उपाधि धारण की। राज्याभिषेक के बाद शिवाजी ने दक्षिण भारत में बड़ा सैन्य अभियान चलाया। झिंजी और कर्नाटक के अनेक किले जीते। 1680 ई. में शिवाजी की मृत्यु हो गई। परन्तु शिवाजी ने छह वर्ष की छोटी अवधि में जिस मराठा शासन की नींव रखी, उसके आधार पर बाद के शासकों ने लगभग डेढ़ दशक तक शासन किया।

शिवाजी की मृत्यु के बाद उनके बड़े पुत्र संभा जी का मराठा सरदारों ने समर्थन नहीं किया। उन्होंने दूसरे पुत्र राजाराम का समर्थन किया। 1689 ई. में संभा जी को औरंगजेब द्वारा मौत की सजा दे दी गई। उनकी मृत्यु के बाद राजाराम को ही उत्तराधिकारी माना गया, क्योंकि संभा जी के पुत्र नाबालिग थे।

1700 ई. में राजाराम की मृत्यु के बाद उनकी पत्नी ताराबाई और उसका पुत्र शिवाजी तृतीय उत्तराधिकारी बने। ताराबाई ने अपनी शक्ति और बुद्धि से औरंगजेब को सफल नहीं होने दिया। परन्तु मुगलों ने मराठों को दो गुटों में बाँट दिया पहला ताराबाई के अधीन और दूसरा संभा जी के पुत्र साहू जी के अधीन मराठा राज्य।

साहू जी मुगल दरबार में काफी समय तक रहे। साहू जी ने चित्तपावन ब्राह्मण बालाजी विश्वनाथ की सहायता से ताराबाई को शासन से हटा दिया। पेशवा मराठों ने मुगलों से चौथ नामक कर वसूला और मराठा सरदारों से सरदेशमुखी नामक कर लिया। इसके बाद पेशवाओं ने मराठा शक्ति को चरमोत्कर्ष पर पहुँचाया। उत्तर भारत और मुगल दरबार में मराठा पेशवा ने अपना दबदबा कायम किया। परन्तु 1761 ई. में पानीपत के तीसरे युद्ध में अहमदशाह अब्दाली ने मराठों को परास्त किया। इस युद्ध ने मराठा शक्ति एवं साम्राज्य को लगभग नष्ट कर दिया।

पाठगत प्रश्न 6.3

1. **सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए -**

चौथ, शिवाजी, बालाजी विश्वनाथ, रायगढ़, मराठा राज्य, 1680 ई०

(क) 17वीं शताब्दी में .... के नेतृत्व में .... का उदय हुआ।

(ख) 1674 ई. में .... को शिवाजी ने अपनी राजधानी बनाया।

(ग) .... ई. में शिवाजी की मृत्यु हुई।

(घ) मराठों ने मुगलों से .... नामक कर वसूला।

(च) साहू जी ने .... की सहायता से ताराबाई को शासन से हटाया।

2 पानीपत का तीसरा युद्ध कब हुआ?

(क) 1526 ई. (ख) 1556 ई.

(ग) 1761 ई. (घ) इनमें से कोई नहीं

3 पुरन्दर की संधि कब हुई?

(क) 1660 ई. (ख) 1665 ई.

(ग) 1674 ई. (घ) 1659 ई.

4 संभाजी को मौत की सजा कब दी गई?

(क) 1689 ई० (ख) 1589 ई०

(ग) 1688 ई० (घ) 1700 ई०

6.4 राजपूत इतिहास तथा राजपूतों के मुगलों के साथ संबंध

राजपूतों की उत्पत्ति के संबंध में कई मत हैं। इतिहासकार अग्निकुल के सिद्धांत से भी राजपूतों की उत्पत्ति मानते हैं। विदेशी इतिहासकार राजपूतों की उत्पत्ति शक, कुषाण या हूण से मानते हैं, जो भारतीय क्षत्रियों में शामिल होकर राजस्थान के निवासी हो गए। कुछ इतिहासकार राजपूतों को वर्ण व्यवस्था वाले समाज में क्षत्रिय वर्ग के रूप में देखते हैं।

उत्तर भारत में प्रतिहार वंश का विघटन हुआ। इसके बाद विभिन्न राजपूत वंशों, जैसे- चौहान, चंदेल और परमार आदि के नियंत्रण में राजपूत क्षेत्र आ गए। राजपूतों ने 11वीं और 12वीं शताब्दी में मुहम्मद गजनी और गोरी के आक्रमण के विरुद्ध संघर्ष किया था। परन्तु आक्रमणकारियों के विरुद्ध संगठित न होने के कारण

राजपूत शासकों की हार हो गई। पृथ्वीराज चौहान ने 1191 ई. में मुहम्मद गोरी को तराईन की पहली लड़ाई में हरा दिया, लेकिन अगले ही वर्ष 1192 ई. में तराईन के दूसरे युद्ध में गोरी ने पृथ्वीराज चौहान को हरा दिया।

सल्तनतकालीन शासकों ने राजपूत राज्यों को समय-समय पर अपने क्षेत्र में मिलाया। मुगलकाल में राजपूतों की मुख्य शक्ति राजस्थान में केन्द्रित थी। राणा कुंभा, राणा सांगा महत्त्वपूर्ण राजपूत शासक थे।

अकबर के शासन काल में मेवाड़ को छोड़कर अन्य राजपूत राजाओं ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली थी। महाराणा प्रताप ने अकबर को चुनौती दी और 1576 ई. में हल्दी घाटी के युद्ध में पराजित हुए। जहाँगीर ने बाद में राणा अमर सिंह को मुगल अधीनता स्वीकार करवाई। मुगलों ने राजपूतों से जो प्रदेश पहले छीन लिए थे, वे प्रदेश राजपूतों को लौटा दिए।

शाहजहाँ के काल में मुगलों व राजपूतों में संबंध अच्छे रहे। परन्तु औरंगजेब के काल में मारवाड़ के उत्तराधिकारी के प्रश्न पर राजपूत नाराज हो गए। जोधपुर के किले पर कब्जा करने की घटना ने मुगलों व राजपूतों के संबंधों पर बुरा असर डाला। अभिजात्य वर्ग में राजपूत राजाओं की संख्या में कमी आने के कारण मुगलों को मराठों से समझौता करना पड़ा। सवाई राजा जयसिंह और जसवंत सिंह औरंगजेब के समय प्रमुख राजपूत मनसबदार थे।

राजपूत मुगल शासकों, विशेषकर अकबर की सहिष्णुता की नीति से प्रभावित थे। राजपूतों ने मुगलों को सेना और प्रशासन में काफी सहयोग दिया, जिससे शक्तिशाली मुगलवंश स्थापित हुआ।

पाठगत प्रश्न 6.4

1. सही वाक्य पर ✓ तथा गलत पर ✗ का निशान लगाइए:

(क) कुछ इतिहासकार राजपूतों की उत्पत्ति के अग्निकुल के सिद्धांत को मानते हैं। ☐

(ख) तराईन का दूसरा युद्ध 1195 ई. में हुआ। ☐

(ग) प्रतिहार वंश के विघटन के बाद चौहान, चंदेल और परमार के नियंत्रण में राजपूत क्षेत्र नहीं आए। ☐

(घ) मुगल काल में राजपूतों की मुख्य शक्ति राजस्थान में केन्द्रित थी। ☐

2. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए -

1576 ई., जहाँगीर, मुहम्मद गोरी

(क) पृथ्वीराज चौहान ने 1191 ई. में तराईन के पहले युद्ध में .... को हराया।